Hindi Language Pedagogy

हिन्दी भाषा शिक्षण

Most Important For Samvida varg 3 CTET UPTET and Other State TET

ऐसी ही PDF के लिये Google पर Search करें – "Nitin Gupta PDF"

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Free Download All Subject PDF

आप नीचे दिये Link से संबंधित Subject की सभी PDF को Download कर सकते हैं

Gepgraphy PDF

Economics PDF

Polity PDF

Science PDF

Computer PDF

Environment PDF

PDF
General Hindi PDF

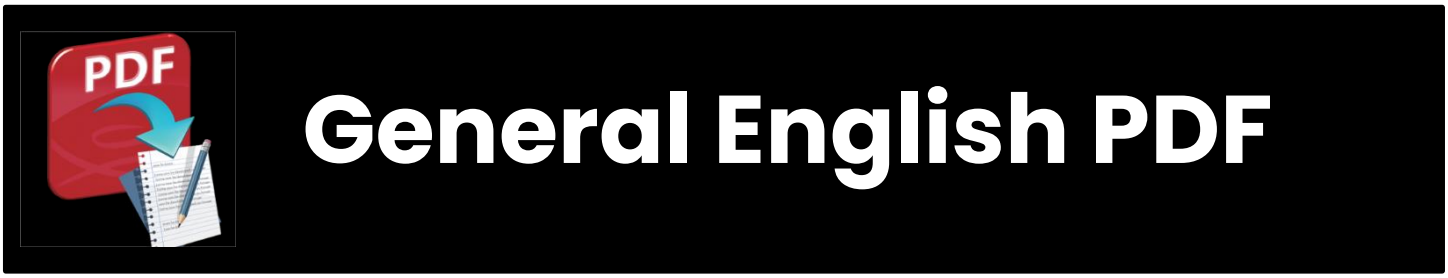
PDF
General English PDF

PDF
Child Development and
Pedagogy PDF

PDF
MP GK PDF

PDF
UP GK PDF

PDF
Rajasthan GK PDF

भाग-1

हिन्दी शिक्षणशास्त्र

भाषा सीखना/अधिगम/अधिग्रहण का अर्थ एवं विशेषताएँ

■ भाषा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने विचारों एवं भावों को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। मनुष्य सम्प्रेषण के लिए सबसे अधिक जिस माध्यम का सहारा लेता है, वह है –भाषा।

- 'भाषा' शब्द 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है- बोलना। भाषा के अन्तर्गत वे सभी माध्यम आते हैं जो अभिव्यक्ति में सहायक होते हैं। भाषा एक मानवीय कलाकृति है। भाषा के कारण ही मनुष्य उत्तम प्राणी बन सका है।

कुछ विद्वानों ने भाषा को निम्न रूप से परिभाषित किया है—

- महर्षि पतंजलि, "भाषा व्यक्त शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण है।"
- सुमित्रानंदन पंत, "भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृदयतंत्री की झंकार है, जिसके स्वर में अभिव्यक्ति होती है।"
- स्वीट के अनुसार, "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति ही भाषा है।"
- प्लेटो के अनुसार, "विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वहीं जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"

भाषा की विशेषताएँ/प्रकृति

1. भाषा सामाजिक व्यवहार की वस्तु है।
2. भाषा-विचार-विनिमय का साधन है।
3. भाषा अर्जित सम्पत्ति है।
4. भाषा जन्मजात है।
5. भाषा अनुकरण का प्रमुख माध्यम है।
6. भाषा का सम्बन्ध परम्परा से होता है।
7. भाषा के मुख्यत: मौखिक व लिखित रूप मिलते हैं।
8. प्रत्येक भाषा की अपनी अलग से एक निश्चित संरचना होती है। यह संरचना भाषा की ध्वनियों, शब्दों व वाक्य रचना में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।
9. भाषा स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलती है।
10. भाषा का मूल रूप सदैव स्थिर रहता है।
11. मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए चिन्तन आवश्यक है। चिन्तन भाषा के अभाव में सम्भव नहीं है।
12. भाषा के द्वारा औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के रूपों का ज्ञान कराया जाता है।
13. भाषा सांस्कृतिक धरोहर है।
14. विद्यालय में जाने से पहले बालक अपनी भाषा पर पूर्ण अधिकार रखता है।
15. भाषा, गतिशील और परिवर्तनशील है।

■ सीखना और अधिग्रहण

किसी नए कार्य को करना ही सीखना/अधिगम कहलाता है।

सीखने की विधियाँ

1. करके सीखना, 2. अनुकरण करके सीखना, 3. निरीक्षण करके सीखना।

भाषा में सीखने की प्रक्रिया अधिग्रहण कहलाती है। किन्तु भाषा अधिग्रहण सहज और स्वाभाविक होता है। किंतु भाषा अधिगम प्रयास पूर्ण होता है।

भाषा अधिग्रहण की क्षमता बालकों में भिन्न-भिन्न होती है। जो बच्चे मानसिक रूप से परिपक्व होते हैं वे शीघ्र ग्रहण करते हैं किन्तु जो धीमा सीखते हैं वे बाद में ग्रहण कर पाते हैं।

भाषा में अधिग्रहण की विभिन्न अवस्थाएँ

- प्रारम्भिक ध्वनियों का साम्यीकरण
- निरर्थक शब्दों का उच्चारण
- भाषा की समझ
- बोलने की अवस्था (कौशलों का निर्माण)
- शब्द भण्डार में वृद्धि
- शुद्ध उच्चारण करने की अवस्था

शैशवावस्था में बालक केवल शब्द भण्डार में ही वृद्धि कर पाता है।

सीशोर के अनुसार

- 4 वर्ष का बालक 5600 शब्द
- 5 वर्ष का बालक 9600 शब्द
- 6 वर्ष का बालक 14700 शब्द

■ मातृभाषा-अर्थ एवं विशेषताएँ

मातृभाषा

जन्म लेने के बाद बालक जो प्रथम भाषा सीखता है उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा का शाब्दिक अर्थ है- माता की भाषा। NCERT के अनुसार, मातृभाषा भाषा का वह रूप है जिसे बालक अपनी माँ से, आस-पड़ोस से, किसी विशेष क्षेत्र से या समाज से सीखता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

मातृभाषा की विशेषताएँ/महत्व/प्रकृति

- ज्ञानोपार्जन का सबसे सरल व सशक्त माध्यम है।
- बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है।
- मातृभाषा में अपनी कहावतें, लोककथाएँ, कहानियाँ, पहेलियाँ, सूक्ति होती हैं, जो सीधे हमारी स्मृति की धरती से जुड़ी होती हैं।
- मातृभाषा से अपने परिवेश का बोध होता हैं।
- मातृभाषा के माध्यम से लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं को गीतों, नृत्यों, नाटकों, कविताओं आदि के जरिये अभिव्यक्ति दी जाती है।
- मातृभाषा में कट्टरता न होना और जनपक्षधर होना उसका समंजन पक्ष है। मातृभाषा में मनुष्य की स्मृतियाँ-बिम्ब अधिक सुरक्षित व पल्लवित होती हैं।
- मातृभाषा बालक के भावात्मक विकास में साधन का काम करती है जो जन-जीवन के संज्ञानात्मक पहलुओं का चित्रण है।
- मातृभाषा बालक की कल्पनाशक्ति व उसकी लेखन प्रवृत्तियों को जगाकर स्वतंत्र रूप से साहित्य-सृजन की प्रेरणा देती है।
- मातृभाषा में सरसता और पूर्णता की अनुभूति होती है।
- प्राथमिक शिक्षा का मुख्य आधार होती है।
- अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता और प्रभावोत्पादकता लाती है।
- सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक होती है।
- सृजनात्मक शक्ति का विकास करती है।
- व्यवहार में परिवर्तन लाती है।
- मातृभाषा मात्र संवाद ही नहीं अपितु संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका भी है।

■ भाषा कौशल

भाषा कौशल एक अभिव्यक्ति का साधन है जिसमें सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है।

भाषा कौशल की विशेषताएँ

- कौशल भाषा का व्यवहारिक पक्ष है।
- बालक की सम्प्रेषणीयता उसके भाषा कौशल पर निर्भर करती है।
- भाषा कौशल अर्जित किया जाता है जो प्रशिक्षण से आता है।
- भाषा कौशल में शाब्दिक अन्त:क्रिया होती है।
- भाषा कौशल से मानसिक, शारीरिक, ज्ञानेन्द्रियाँ आदि सभी क्रियाएँ क्रियाशील रहती हैं।
- पहले के कौशल बाद के कौशल से अच्छे माने जाते हैं।
- भाषा कौशल अन्त:सम्बन्धित होते हैं।
- भाषा कौशलों का विकास धीरे-धीरे होता है।

श्रवण कौशल

किसी का वाचन सुनने और सुनकर अर्थ एवं भाव को समझने की क्रिया श्रवण कौशल कहलाती है।

श्रवण कौशल के उद्देश्य

- दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डालना।
- दूसरे के द्वारा किए गए उच्चारण को सुनकर शुद्ध उच्चारण का अनुकरण करना।
- शुद्ध सामग्री का अर्थ समझने की योग्यता विकसित करना।
- वक्ता के मनोभावों को समझने में निपुण बनना।
- ध्वनियों का विभेदीकरण करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्रों में शब्द भण्डार की वृद्धि करना।
- समाज, व्यवहार, जीवन सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करना।

श्रवण कौशल की विधियाँ

- सस्वर पाठ
- वाद-विवाद विधि
- नाटक मंचन
- प्रश्नोत्तर विधि
- भाषण विधि

वाचन कौशल

अपने भावों और विचारों को मौखिक भाषा के द्वारा बोलकर अभिव्यक्त करना ही वाचन कौशल कहलाता है।

वाचन कौशल के उद्देश्य

- अपने भावों, विचारों, अनुभवों को सरलतापूर्वक, स्पष्ट ढंग से व्यक्त करने के योग्य बनना।
- शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, उचित गति एवं हाव-भाव के साथ बोलना सीखना।
- निसंकोच होकर अपने विचारों को व्यक्त करने के योग्य बनना।
- परस्पर वार्तालाप करने के योग्य बनना।
- धारा प्रवाह बोलने के योग्य बनना।
- स्वाभाविक रूप से बोलने के भाव जागृत करना।
- अपने विचारों को प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत करना।
- आदर्श वाचन में अध्यापक अपने वाचन को गति, यति, आरोह-अवरोह, स्वराघात को ध्यान में रखकर कक्षा में प्रस्तुत करता है।
- अध्यापक द्वारा आदर्शवाचन के उपरान्त छात्रों द्वारा कक्षा में अनुकरण किया जाता है। पाठ के भावानुसार वाचन पैदा करने की क्षमता विकसित करना तथा ओजपूर्ण एवं उच्च स्वर से शृंगार रस के शिक्षण का वाचन आदि होता है।
- लिखित सामग्री को बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन वाचन कहलाता है, मौन वाचन के माध्यम से छात्रों में स्वाध्याय की रूचि जागृत की जाती है।

वाचन कौशल की शिक्षण विधियाँ

सस्वर वाचन

- सस्वर वाचन के माध्यम से शिक्षक छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास कर सकता है।
- शिक्षक पहले स्वयं अनुच्छेद का वाचन करता है, फिर कक्षा के छात्रों से सस्वर वाचन कराता है।
- छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी संकोच दूर हो जाता है तथा उनका उच्चारण शुद्ध हो जाता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

कविता पाठ

- छोटे बच्चों की बालगीतों व कविताओं में अधिक रूचि होती है।
- शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को कविता याद करने के लिए उत्साहित करे तथा किसी समारोह आदि में उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह तथा अंग-संचालन के साथ सुनाने का अवसर प्रदान करें।

कहानी सुनना

- कहानी कहना वाचन कौशल का एक सशक्त साधन है।
- छोटे बच्चे कहानियाँ अधिक पसंद करते हैं। शिक्षक पहले छात्रों को कहानी सुनाए, फिर उसी कहानी को सुनाने के लिए छात्रों से कहें।
- शिक्षक कहानी के वाचन में छात्रों की यथासम्भव सहायता करें। शिक्षक ध्यान रखें कि कहानी छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप हो।
- छात्रों की कल्पना-शक्ति के विकास के लिए शिक्षक अधूरी कहानियों को छात्रों से पूरी करा सकता है। शिक्षक छात्रों से मौखिक प्रश्न पूछकर छात्रों में क्रमबद्ध तरीके से वर्णन कौशल, चिन्तन-मनन व कल्पना शक्ति का विकास कर सकता है।

चित्र वर्णन

- छोटे बच्चे चित्र देखने में रूचि लेते हैं। अत: चित्रों के माध्यम से भी उनके वाचन कौशल का विकास किया जा सकता है।
- शिक्षक छात्रों को चित्र दिखाकर उसके बारे में उनके भावों को सचेत करके उससे सम्बन्धित वर्णन करा सकते है।
- कहानी की विभिन्न घटनाओं के चित्र दिखाकर उनके आधार पर छात्रों को कहानी सुनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- पशु-पक्षी का चित्र कक्षा में टाँगकर उसके बारे में बच्चों से बहुत-सी बातें पूछी जा सकती हैं। वाचन कौशल के विकास के लिए यह एक रोचक विधि है।

प्रश्नोत्तर

- छात्रों के वाचन कौशल का विकास करने के लिए प्रश्नोत्तर एक अच्छी विधि है।
- इसमें अध्यापक छात्रों से प्रश्न पूछकर उनसे प्राप्त उत्तरों द्वारा उनकी श्रवण अभिव्यक्ति को विकसित करता है।
- अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों से पूर्ण वाक्यों में उत्तर स्वीकार करे। यदि उत्तर अधूरा या अशुद्ध हो तो उसे सहानुभूति पूर्ण ढंग से ठीक कराए।

वार्तालाप

- शिक्षक छात्रों से औपचारिक व अनौपचारिक दोनों तरह का वार्तालाप करके उनके वाचन कौशल का विकास कर सकता है।
- शिक्षक छात्रों को अलग-अलग भूमिकाएँ देकर उनका परस्पर वार्तालाप करा सकता है। वार्तालाप कक्षा में, कक्षा से बाहर, खेल के मैदान में या घूमते हुए कहीं भी किया जा सकता है।
- छात्रों के वार्तालाप में शिक्षक की भाषा सरल, स्पष्ट, व्यवस्थित व जिज्ञासा को प्रेरित करने वाली हो। इससे बालक देश-काल व पात्रानुकूल अभिव्यक्ति को सीख पाते हैं।

वाद-विवाद

- वाद-विवाद में छात्र पूर्व-निर्धारित विषय पर विचारों को व्यक्त करते हैं। कुछ छात्र पक्ष व कुछ विपक्ष में विचार प्रस्तुत करते हैं।
- वाद-विवाद से विचाराभिव्यक्ति को तर्कपूर्ण ढंग से प्रतिपादित करने की कुशलता आती है।
- वाद-विवाद का विषय पहले से निर्धारित करके छात्रों को सूचित करना चाहिए जिससे वे उसकी अच्छी तरह तैयारी कर सकें।

भाषण

- भाषण मौखिक अभिव्यक्ति विकसित करने का एक सशक्त साधन है।
- अत:छात्रों को भाषण देने के प्रचुर अवसर दिए जाने चाहिएँ इसमें शिक्षक पूर्व-निर्धारित किसी विषय पर छात्रों को भाषण देने का अवसर प्रदान कर सकता है।
- भाषण के माध्यम से छात्र किसी विषय पर अधिक से अधिक विचारों का संकलन व उन्हें क्रमबद्ध तरीके से व्यक्त करना सीखते हैं।
- शिक्षक को छात्रों का मार्गदर्शन करके उन्हें भाषण प्रतियोगिता के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। भाषण के लिए ऐसे विषयों का चयन किया जाना चाहिए जो छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप, उपयोगी व रोचक हो।

नाटक मंचन

- मौखिक अभिव्यक्ति के सभी गुणों को विकसित करने के लिए नाटक एक उपयोगी साधन है।
- इससे उचित हाव-भाव, उतार-चढ़ाव, प्रवाह, अवसर के अनुकूल भाषा आदि का अभ्यास कराया जा सकता है।

टेप रिकॉर्डर

- टेप रिकॉर्डर के माध्यम से छात्रों को रिकॉर्ड की गई अच्छी वार्ताएँ, भाषण, समसामयिक चर्चाएँ सुनाई जा सकती है।
- उन्हें सुनाकर छात्रों को प्रवाहमयी भाषा बोलने के लिए उत्साहित किया जाता है। इसमें पहले छात्रों को ध्यान से सुनने के लिए कहा जाता है।
- टेप रिकॉर्डर का बालकों के उच्चारण सुधारने में आवश्यकता अनुसार प्रयोग किया जा सकता है।

टेलीफोन

- छात्रों को टेलीफोन या मोबाइल पर बातचीत का अवसर देकर उनकी मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित किया जा सकता है।
- टेलीफोन पर छात्रों की बातचीत सुनकर शिक्षक उनकी मौखिक अभिव्यक्ति की कमियों का निराकरण कर सकता है।
- इससे छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता, सार्थकता, शिष्टता, सुबोधता आदि गुणों को विकसित किया जा सकता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

पठन कौशल

पठन कौशल सम्बन्धित अवधारणाएँ निम्नलिखित हैं—

पठन का अर्थ

पठन का अर्थ लिखी हुई सामग्री को पढ़ते हुए उसका अर्थ ग्रहण करने, उसके पश्चात् उस पर अपना मंतव्य (सोच, विचार) स्थिर करने और फिर उसके अनुसार व्यवहार करने से है। अर्थात् अर्थ एवं भाव को ध्यान में रखकर किसी लिखित भाषा को पढ़ना ही पठन कौशल कहलाता है।

पठन के अन्तर्गत निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

- ध्वनि के प्रतीक वर्णों को देखकर पहचानना।
- वर्णों के प्रयोग से शब्दों का निर्माण करना।
- शब्दों को सार्थक इकाइयों में बाँटकर पढ़ना।
- पठित सामग्री के विचारों को समझाना।
- पठित सामग्री पर अपना मंतव्य स्थिर करना।

पठन कौशल के उद्देश्य

- वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचान कर पढ़ना।
- विद्यार्थियों को तीव्र गति से पठन का अभ्यास कराना।
- स्वाध्याय की आदत का विकास करना।
- आत्मविश्वास जागृत करना।
- छात्रों में एकाग्रता, तत्परता, रूचि जागृत करना।
- उचित हाव-भाव के साथ पढ़ने के योग्य बनना।
- दृश्य इन्द्रियों को क्रियाशील करना।
- लेखक के मनोभावों को स्पष्ट ढंग से समझने की योग्यता विकसित करना।

पठन कौशल की विधियाँ

- वर्ण उच्चारण विधि
- अक्षर बोध विधि
- ध्वनि साम्य विधि
- देखो और कहो विधि
- अनुकरण विधि

पठन शिक्षण की विधियाँ

- वर्ण विधि
- वाक्य विधि
- कविता विधि
- संयुक्त विधि
- शब्द विधि
- ध्वनिसाम्य विधि
- साहचर्य/संगति विधि

वर्ण विधि

- वर्ण विधि में शिक्षक एक-एक वर्ण को श्यामपट्ट पर लिखकर उसका उच्चारण करता है।
- छात्र श्यामपट्ट पर लिखी या पुस्तक में प्रकाशित वर्ण की आकृति को देखते हैं और शिक्षक का अनुकरण करते हुए वर्ण का उच्चारण करते हैं।
- इसमें छात्र क्रमानुसार वर्णों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
- इस विधि में सबसे पहले स्वर, फिर व्यंजन, तत्पश्चात् मात्राओं तथा शब्दों को पढ़ना सिखाया जाता है।

शब्द-विधि

- इस विधि में प्रारम्भ से ही बच्चों को शब्दों का परिचय कराया जाता है।
- इसके बाद उस शब्द में विद्यमान वर्णों का ज्ञान कराया जाता है।
- शब्दों का ज्ञान कराने के लिए चित्रों की सहायता ली जाती है। अध्यापक चित्र दिखाकर, चित्र के नीचे लिखे उसके नाम का उच्चारण कराता है तथा छात्र उसका अनुकरण करते हैं।
- इस विधि में क्रमबद्ध तरीके से स्वरों एवं व्यंजनों का ज्ञान दिया जाता है।
- यह एक मनोवैज्ञानिक, आकर्षक व रोचक विधि है।
- इस विधि में 'पूर्ण से अंश की ओर', 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' तथा 'सरल से कठिन की ओर' आदि शिक्षण सूत्रों का पालन किया जाता है।

वाक्य विधि

- वाक्य विधि शब्द विधि का ही विस्तार है। इसमें पठन का प्रारम्भ वाक्य से होता है। इसमें शिक्षक चार्ट पर लिखकर वाक्य प्रस्तुत करता है।
- शिक्षक वाक्य को पढ़ता है तथा छात्र उसका अनुकरण करते हैं। बार-बार वाक्य पढ़ने से छात्र शब्दों से परिचित हो जाते हैं। इसके बाद वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को अलग क्रम में बच्चों के सामने रखते हैं; जैसे- यह मेरा घर है। यह घर मेरा है। मेरा है यह घर आदि।

ध्वनिसाम्य विधि

- ध्वनि साम्य विधि में बालकों के सामने वे ही शब्द रखे जाते हैं जिनकी ध्वनियों में समानता होती है। समान ध्वनि के शब्दों को एक साथ पढ़ाया जाता है। जैसे- कल, चल, छल, पल, फल, नल, बल, हल आदि।
- इस विधि में एक ही वर्ण का बार-बार उच्चारण करने से ध्वनियों का पर्याप्त अभ्यास हो जाता है।

कविता विधि

- बच्चों की संगीत में स्वाभाविक रूचि होती है। इसी को ध्यान में रखकर कविता विधि का विकास किया गया। इसकी प्रक्रिया कहानी विधि जैसी है।
- इस विधि में कहानी की अपेक्षा सरल वाक्यों वाली कविता होती है। बच्चों से कविता का गायन करवाया जाता है।
- बच्चे धीरे-धीरे शब्दों और वर्णों को पहचानने लगते हैं। इसके बाद वर्णों का क्रम से ज्ञान कराया जाता है।

साहचर्य/ संगति विधि

- साहचर्य विधि का प्रयोग मांटेसरी ने किया था।
- इस विधि में बालक की अनुभव सीमा में आने वाले पदार्थों के चित्रों को कमरे में रख दिया जाता है या दीवार आदि पर टाँग दिया जाता है।
- बच्चे चित्रों के नीचे लिखे नामों तथा कार्डों पर लिखे नामों में साहचर्य/संगति स्थापित करते हैं।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- अध्यापक इन शब्दों या वर्णों का उच्चारण कराकर बच्चों की उनसे पहचान कराता है। बच्चे खेल-खेल में सक्रिय होकर वाचन करना सीख जाते हैं।

संयुक्त विधि

- उपर्युक्त विधियों में से कोई भी विधि पूर्णत: दोष मुक्त नहीं है। अत: जिस-जिस विधि में जो-जो अच्छी बातें हों, उनको ग्रहण कर लेना चाहिए। जो अंश जिस विधि से ठीक ढंग से सिखाया जा सके, उसे उसी विधि से सिखा दिया जाए। इस मिश्रित रूप को ही संयुक्त विधि कहते हैं।
- जैसे- देखो और कहो विधि से वर्णों की पहचान कराना, ध्वनिसाम्य विधि से एक-एक वर्ण से अनेक शब्द बनाकर वर्णों को पढ़ना सिखाना, कहानी विधि या वाक्य विधि से वाक्य का पठन सिखाया जा सकता है।

पठन कौशल का मूल्यांकन

- क्या छात्र वर्णमाला के सभी वर्णों को पहचानकर पढ़ सकता है?
- क्या छात्र वर्णों के मेल से शब्द निर्माण कर सकता है?
- क्या छात्र वाक्यों को समुचित रूप से पढ़ पाता है?
- क्या छात्र उचित लय के साथ कविता-पाठ कर सकता है?
- क्या छात्र सभी विधाओं को उपयुक्त तरीके से पढ़ पाता है?
- क्या छात्र पठन-सामग्री का अर्थ-ग्रहण कर सकता है?
- क्या छात्र मुहावरों, लोकोक्तियों व सूक्तियों के सन्दर्भ के अनुसार अर्थ को समझता है?
- क्या छात्र स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ सकता है?
- क्या छात्र हाव-भाव, आरोह-अवरोह व बलाघात के साथ पढ़ता है?
- क्या छात्र एकाग्रता के साथ पढ़ सकता है?
- क्या छात्र यति, गति, विराम चिह्नों आदि को ध्यान में रखकर पढ़ सकता है?
- क्या छात्र पठित अंश के केन्द्रीय भाव को समझता है?
- क्या छात्र श्रोताओं की संख्या एवं अवसर के अनुकूल वाणी को नियंत्रित कर सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री से तथ्यों, भावों एवं विचारों का चयन कर सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री के सारांश को बता सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री से निष्कर्ष निकाल सकता है?

लेखन कौशल

भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में होती है तो इसे लेखन कौशल कहते हैं।

लेखन के प्रकार

लेखन के प्रकार निम्नलिखित हैं—

सुलेख

- सुंदर लेख को सुलेख कहते हैं। सुलेख का लेखन कौशल शिक्षण में विशेष स्थान है।

एक सुंदर लेख में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

- परस्पर वर्णों में तथा वर्णों का मात्राओं के साथ आकार की दृष्टि से अनुपात हो।
- देवनागरी लिपि के वर्णों में पाई (।) का चिह्न लेख को सुंदर बनाने में बहुत महत्त्व रखता है। यदि पाई सीधी होगी तो वर्ण सुंदर बनेंगे। पाई का कोण 90 अंश पर होना चाहिए।
- देवनागरी लिपि के वर्णों पर शिरोरेखा लगाना अनिवार्य माना जाता है। अत: प्रत्येक शब्द पर शिरोरेखा अवश्य हो। शिरारेखा बिल्कुल सीधी होनी चाहिए।
- वर्णों में मात्राओं का योग ठीक से हो। विशेष रूप से 'इ' की मात्रा से पूर्व आधे व्यंजन के योग में तथा 'र' के साथ लगने वाली 'उ' व 'ऊ' की मात्राओं में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है।
- वर्णों, शब्दों, वाक्यों तथा पंक्तियों की परस्पर दूरी समुचित रूप से होनी चाहिए। यह दूरी न तो बहुत अधिक हो और न ही बहुत कम।
- लेख को समुचित अनुच्छेदों में विभाजित किया जाना चाहिए। अनुच्छेद निर्माण एक कला है। अलग-अलग विचार के लिए अलग-अलग अनुच्छेद की रचना की जानी चाहिए। ध्यान रहे, न तो एक ही विचार के लिए कई अनुच्छेद बनाए जाएँ और न ही एक अनुच्छेद में कई विचारों का समावेश हो।
- लिखते समय पृष्ठ के बाँयी ओर उचित हाशिया छोड़ा जाना भी सुलेख के लिए अनिवार्य है।

अनुलेख

- किसी आदर्श लिखाई का हुबहू अनुकरण करना अनुलेख या अनुलिपि कहलाता है।
- इसमें छात्र शिक्षक के आदर्श लेख का बिल्कुल हुबहू अनुकरण करते हैं। शिक्षक तख्ती या कॉपी पर वर्ण या शब्द लिख देता है और बच्चे देखकर ठीक वैसा ही लिखने का अभ्यास करते हैं।

श्रुतलेख

- श्रुतलेख में छात्र सुनी हुई ध्वनियों को लेखनीबद्ध करते हैं।
- श्रुतलेख में सुंदर लेख का इतना महत्त्व नहीं है, जितना भाषा की शुद्धता का।
- श्रुतलेख का उद्देश्य छात्रों की श्रवणेन्द्रिय को पूर्ण शिक्षित करना भी है ताकि वह भाषा के शुद्ध रूप को सावधानी से सुन सकें।
- इसमें बच्चे की लिखावट में सुडौलता, स्पष्टता व गति लाना भी उद्देश्य रहता है।

लेखन कौशल के उद्देश्य

- वर्णों को ठीक-ठीक लिखना सीखना।
- सुन्दर लेख का अभ्यास करना।
- शुद्ध अक्षर विन्यास का ज्ञान कराना।
- वाक्य रचना के नियमों से परिचित होना।
- विचार तार्किक क्रम में प्रस्तुत करना।
- अनुभवों का लेखन करना।
- लिपि, शब्द, मुहावरों का ज्ञान होना।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- वाक्य रचना, शुद्ध वर्तनी, विराम चिन्हों का प्रयोग सिखाना।
- छात्रों को सृजनात्मक शक्ति और मौलिक रचना करने में निपुण बनाना।

लेखन कौशल की विधियाँ

खंडशः लेखन विधि

सार्थक रेखाओं को खींचने के अभ्यास के बाद वर्णों का खंडशः लेखन कराया जाना चाहिए। इस विधि में पूरे वर्ण को एक बार लिखना न सिखाकर उसे खंडों में लिखना सिखाया जाता है। इस विधि से बच्चे के लिए लिखना सीखना सुगम हो जाता है; जैसे-

1. ठ व क = क
2. ठ व ब = व
3. ट प फ = फ
4. ट प ष = ष

रूप अनुसरण या रेखा अनुसरण विधि

- यह एक अत्यन्त पुरानी व परम्परागत विधि है।
- यह लेखन अभ्यास के लिए अत्यंत उपयोगी विधि है। इस विधि में अध्यापक तख्ती पर पेंसिल से वर्ण लिखता है, बच्चे उस लिखे हुए वर्ण पर कलम चलाते हैं और स्याही फेरते हैं।
- छात्र उन बिन्दुओं को जोड़कर वर्ण की आकृति बनाना सीख जाते हैं। धीरे-धीरे छात्र उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं जिसमें शिक्षक ऊपर की पंक्ति में शब्द लिखता है।
- इस विधि में अध्यापक को छात्रों का हाथ पकड़कर वर्ण की आकृति बनाने में उनकी सहायता करनी चाहिए।

मांटेसरी विधि

- इस विधि में सबसे पहले बच्चे को लकड़ी, गत्ते आदि से बने वर्ण दिए जाते हैं।
- छात्रों को उन पर उंगली फेरने के लिए कहा जाता है। उंगली फेरने के अभ्यास के बाद छात्रों को उन वर्णों के बीच पेंसिल चलाने को कहा जाता है।
- जब बच्चों की उंगलियाँ सध जाती हैं तब उन्हें स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए कहा जाता है। इस अभ्यास के बाद बालक स्वतंत्र रूप से गत्ते व लकड़ी के वर्णों के बिना लिखना प्रारम्भ कर देते हैं।

पेस्टालॉजी की रचनात्मक विधि

- इस विधि में लकड़ी व प्लास्टिक आदि से बने वर्णों के टुकड़ों को संकलित किया जाता है। ये टुकड़े रेखा, वृत्त, अर्धवृत्त आदि होते हैं।
- छात्र किसी वर्ण को देखकर टुकड़ों को ढूँढकर और उन्हें जोड़कर वैसा ही वर्ण बनाने का प्रयास करते हैं। इसमें विभिन्न टुकड़ों को मिलाकर धीरे-धीरे सभी वर्णों को बनाना सिखाया जाता है।
- इसमें सरल वर्णों को पहले तथा कठिन वर्णों को बाद में सिखाते हैं।

परम्परागत विधि

- इस विधि में पहले स्वर, फिर व्यंजन, फिर शब्द, उसके बाद मात्राएँ तथा वाक्य लिखने सिखाए जाते हैं।

समान आकृति समूह विधि

- इस विधि में वर्णों को कुछ समूहों में विभाजित कर लिया जाता है तथा एक समूह के वर्णों को एक साथ लिखना सिखाया जाता है। इस विधि में थोड़े से प्रयास से ही छात्रों को यह अनुभव होने लगता है कि उन्होंने बहुत कुछ सीख लिया है; जैसे—
  1. अ, आ, ओ, औ
  2. व ब क
  3. ड ड़ ङ
  4. न म भ

जेकासर विधि

- इस विधि में बच्चों के सामने पूरा वाक्य प्रस्तुत किया जाता है। बालक अनुकरण करते हुए वाक्य के एक-एक शब्द को लिखते हैं।
- पूरे वाक्य को लिखकर उसे वाक्य के मूल रूप से मिलाया जाता है तथा उसकी शुद्धता को सुनिश्चित किया जाता है।

■ लेखन कार्य का मूल्यांकन

शिक्षक को छात्रों के लेखन कार्य का मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. क्या शिक्षार्थी दिए गए व्यंजन, मात्रा, संयुक्ताक्षर व शब्दों को देखकर लिख सकता है?
2. क्या शिक्षार्थी स्वर, व्यंजन, मात्रा संयुक्ताक्षर, शब्द, वाक्य आदि का श्रुतलेख लिख सकता है?
3. क्या शिक्षार्थी सुपाठ्य लेख लिख सकता है?
4. क्या शिक्षार्थी उचित गति के साथ लिख सकता है?
5. क्या शिक्षार्थी उचित वाक्य विन्यास करते हुए लिखता है?
6. क्या शिक्षार्थी शुद्ध वर्तनी के साथ लिख सकता है?
7. क्या शिक्षार्थी शुद्ध विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग करते हुए लिख सकता है?
8. क्या शिक्षार्थी यथोचित अनुच्छेदों का निर्माण करते हुए लिखता है?
9. क्या शिक्षार्थी प्रसंगानुकूल शब्दों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग कर सकता है?
10. क्या शिक्षार्थी विचारों को क्रमबद्ध रूप से लिखकर व्यक्त करता है?
11. क्या शिक्षार्थी अपनी रचना में विचारों की सुसंबद्धता को बनाए रखता है?
12. क्या शिक्षार्थी विषय तथा अभिव्यक्ति के अनुकूल शैली का प्रयोग करते हुए लिखता है?
13. क्या शिक्षार्थी सृजनात्मक और रचनात्मक लेखन कर सकता है?

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

■ लेखन-दोष

लेखन दोष निम्नलिखित कारणों पर आधारित होता है।

व्यक्तिगत कारण

- कई बार लेखन दोष कुछ व्यक्तिगत कारणों से होता है। यदि किसी बच्चे का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं हो तो वह लिखना कुछ चाहता है और लिख कुछ बैठता है। बच्चे का शारीरिक दोष भी उसके लेखन दोष का कारण बन जाता है।

स्वभावगत कारण

- कुछ बच्चे लेखन में लापरवाही बरतते हैं। वे लेखन के प्रति उदासीन होते हैं तथा उपेक्षाभाव बरतते हैं। बार-बार अशुद्धियों का ध्यान दिलाने पर भी वे उनको सुधारने की ओर प्रत्यनशील नहीं होते। वे एक ही शब्द को एक ही पृष्ठ पर एक बार शुद्ध तो दूसरी बार अशुद्ध लिख देते हैं, अर्थात् इस प्रकार के छात्र लापरवाह स्वभाव के कारण अशुद्धियों को गंभीरता से नहीं लेते।

व्याकरणिक कारण

- लेखन में कुछ अशुद्धियों का कारण व्याकरण का अधूरा ज्ञान होता है। कहीं लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ होती हैं; जैसे नाक, दही, पतंग आदि शब्दों के लिंगों का प्रयोग छात्र प्राय: गलत करते हैं तथा कहीं वचन सम्बन्धी गलतियाँ होती हैं।

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी व्याकरण शिक्षण की विधियाँ

व्याकरण शिक्षण

व्याकरण का शुद्ध प्रयोग करना एक कला है जिसके लिए चार कौशलों का होना अनिवार्य हैं- पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना। किन्तु भाषा कौशल के आ जाने से बालक केवल अर्थ और भाव ही ग्रहण कर पाता है। वह भाषा को शुद्ध नहीं कर पाता, अत: भाषा में शुद्धता लाने के लिए व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता होती है। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह दैनिक जीवन में आदान-प्रदान करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है और भाषा की मितव्यता व्याकरण के माध्यम से आती है और भाषा को एक निश्चित रूप देने के लिए हम व्याकरण का प्रयोग करते हैं।

परिभाषा

"भाषा के रूप की शुद्ध व्यवस्था ही व्याकरण है"।

– वृहयूम फील्ड

"प्रचलित भाषा सम्बन्धी नियमों की शुद्ध व्यवस्था ही व्याकरण है"।

– डॉ. जगर

व्याकरण के शिक्षण उद्देश्य

- भाषा को विकृति से बचाने के लिए
- भाषा के शुद्ध रूप को समझने एवं उसमें स्थायित्व लाने के लिए
- भाषा की सीमाओं का उल्लंघन होने से बचाने के लिए
- भाषा के सर्वमान्य रूप को सीखने के लिए
- विद्यार्थियों में रचना तथा सर्जनात्मक प्रवृत्ति का निर्माण करने के लिए
- कम शब्दों में शुद्धतापूर्वक अपने भावों को व्यक्त करने के लिए
- भाषा की अशुद्धता को समझने व परखने के लिए
- छात्रों की ध्वनियों, ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर एवं उच्चारण के नियमों का ज्ञान कराना।
- विद्यार्थियों में विश्लेषण चिन्तन एवं तर्क क्षमता का विकास करना।
- भाषा के व्याकरण संगत रूप को सुरक्षित रखना।

व्याकरण के भेद

1. औपचारिक व्याकरण
2. अनौपचारिक व्याकरण

1. **औपचारिक व्याकरण**—जब बच्चों को एक पाठ्य-पुस्तक की सहायता से विधिवत् ढंग से क्रमपूर्वक व्याकरण के नियमों, उपनियमों, उनके भेदों तथा उपभेदों का ज्ञान कराया जाता है, तो वह औपचारिक व्याकरण शिक्षण कहलाता है।
2. **अनौपचारिक व्याकरण**—बच्चों में भाषा का सीखना अनुकरण विधि द्वारा होता है। वे दूसरों की नकल करके भाषा को सीखते हैं।

व्याकरण शिक्षण की विधियाँ

व्याकरण शिक्षण के लिए हम निम्नलिखित विधियाँ अपना सकते हैं—

आगमन विधि—आगमन विधि में हम उदाहरणों के द्वारा पढ़ते है। उदाहरणों से सामान्य सिद्धान्त निकालते हैं। इस विधि में हम सरल से कठिन, ज्ञात से अज्ञात और स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलते हैं।

निगमन विधि—जब शिक्षण, नियमों पर आधारित होकर करवाया जाता है तो यह निगमन विधि कहलाती है। बच्चे बताए हुए नियमों को रट लेते हैं। यह विधि रट्टामार विधि मानी जाती है।

समवाय विधि—इस विधि का दूसरा नाम सहयोग प्रणाली है। इस विधि में भाषा के अन्तर्गत मौखिक या लिखित कार्य कराते समय प्रासंगिक रूप से व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है।

भाषा संसर्ग प्रणाली—यह विधि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। इस प्रणाली में बच्चों को ऐसे लेखकों की रचनाएँ पढ़ने के लिए दी जाएँ जिनका भाषा पर पूर्ण अधिकार है। इस विधि में बच्चे व्याकरण के नियमों पर ज्यादा बल न देकर, दूसरों द्वारा उच्चारित शब्दों का अनुकरण करके भाषा का शुद्ध रूप प्रयोग करते हैं।

प्रयोग या विश्लेषण प्रणाली—इस विधि में अध्यापक उदाहरण देकर उनकी व्याकरण तथा प्रयोग के आधार पर व्याकरण के नियमों का ज्ञान करवाता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी गद्य शिक्षण-निबंध एवं कहानी

गद्य शिक्षण को सामान्यत: पठन शिक्षा के समानान्तर माना जाता है। पठन की आरम्भिक शिक्षा-अक्षर, शब्द तथा वाक्य पठन कौशल तक सीमित है परन्तु पठन के भावग्रहण आदि उच्च कौशल गद्य शिक्षण के अन्तर्गत आते हैं। गद्य शिक्षण के समय पठन-गति, शब्द उच्चारण, शब्दार्थ, ज्ञान व्याख्या, विचार विश्लेषण आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

गद्य शिक्षण के उद्देश्य

1. मनोयोग से सुनने तथा सुनकर अर्थ ग्रहण करने के योग्य बनाना।
2. एकाग्रभाव से पढ़ने की कुशलता उत्पन्न करना।
3. छात्रों को उचित गति, आरोह-अवरोह के साथ पढ़ने में कुशल बनाना।
4. विराम चिन्हनों को ध्यान रखते हुए पढ़ने के योग्य बनाना।
5. मौन वाचन करके अर्थ ग्रहण करने के योग्य बनाना।
6. शुद्ध उच्चारण का ज्ञान प्रदान करना।
7. छात्रों में भावाभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।
8. मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास करना।
9. छात्रों को लिपि का ज्ञान देना।
10. छात्रों में भाषा विषयक शुद्धता के प्रति सावधानी का भाव उत्पन्न करना।
11. छात्रों के शब्द-भण्डार में वृद्धि करना।
12. छात्रों में शब्दकोश के प्रयोग की योग्यता विकसित करना।
13. निरीक्षण शक्ति का विकास करना।
14. छात्रों में स्पष्ट, संगत एवं क्रमबद्ध चिन्तन को विकसित करना।
15. छात्रों में कल्पना शक्ति का विकास करना।
16. छात्रों में विवेचनात्मक एवं समीक्षात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
17. तथ्यों को समझने तथा उनका जीवन में प्रयोग करने के योग्य बनाना।
18. छात्रों के भाषा सम्बन्धी ज्ञान में वृद्धि करना।

गद्य शिक्षण की विधियाँ

गद्य शिक्षण की विधियाँ निम्नलिखित हैं—

1. अर्थ कथन विधि

गद्य शिक्षण की यह एक परम्परागत विधि है। इस विधि में शिक्षक पहले गद्यांश का वाचन करता है फिर उसमें आए कठिन शब्दों का अर्थ बतलाता है तथा बाद में सभी वाक्यों का सरलार्थ बताते हुए गद्यांश का अर्थ स्पष्ट कर देता है। इस विधि में सारा कार्य शिक्षक ही करता है तथा छात्र निष्क्रिय श्रोता बने रहते हैं। अत: यह विधि अमनोवैज्ञानिक है।

2. व्याख्या विधि

यह शिक्षण विधि अर्थ कथन विधि का ही विकसित रूप है। इस विधि में शिक्षक आदर्शवाचन के उपरान्त कठिन शब्दों का अर्थ व गद्यांश का सरलार्थ करते हुए शब्दों व भावों की व्याख्या भी करता है। शब्दों की व्याख्या के अन्तर्गत शिक्षक शब्दों में आए उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि व समास आदि की दृष्टि से भी व्याख्या करता है तथा शब्दों में छिपे प्रसंगों व कथानकों को स्पष्ट करता है और भावों को स्पष्ट करने के लिए उनकी विस्तृत व्याख्या करता है। इसमें शिक्षक लेखक का दार्शनिक पक्ष, उद्देश्य, उसके भावपक्ष व कलापक्ष आदि की व्याख्या करते हुए व्यापक अर्थ बताने का प्रयास करता है जिससे छात्रों में अनुभूति का विकास होता है।

3. प्रश्नोत्तर विधि

इस विधि को विश्लेषण विधि भी कहा जाता है। यह व्याख्या प्रणाली का ही परिमार्जित रूप है। इस विधि में प्रवचन प्रविधि की सहायता ली जाती है। इसमें सर्वप्रथम शिक्षक कठिन शब्दों का अर्थ छात्रों से ही निकलवाने का प्रयास करता है परन्तु जब किसी भी तरीके से अर्थ निकलवाने में सफल नहीं हो पाता तो उसका अर्थ शिक्षक स्वयं बताता है। इस विधि में व्याख्या विधि की भाँति शब्दों व भावों की व्याख्या की जाती है, अन्तर इतना है कि इसमें शब्दों व भावों की व्याख्या करने के लिए प्रश्न-उत्तर की सहायता ली जाती है। इसमें छात्रों को प्रश्न सुनकर स्वयं सोचने व उत्तर देने का अवसर मिलता है अत: छात्र पूर्णत: सक्रिय रहते हैं।

4. समीक्षा विधि

इस विधि में शिक्षक पाठ्यवस्तु का वाचन कर भाषायी तत्त्वों के आधार पर पाठ्यवस्तु के गुण-दोषों की समीक्षा करता है। इस विधि में शिक्षक सर्वप्रथम गद्य-पाठ के अर्थ एवं भावों का स्पष्टीकरण करता है। भाव स्पष्टीभाव के उपरान्त शिक्षक छात्रों को भाषायी तत्त्वों का ज्ञान प्रदान करता है। इसके आधार पर ही शिक्षक छात्रों को पाठ्यवस्तु के गुण-दोषों की समीक्षा करने के लिए कहता है। यह विधि छात्रों में स्वाध्याय की आदत उत्पन्न करने में सहायक होती है।

5. संयुक्त विधि

प्रारम्भिक स्तर पर उपर्युक्त सभी विधियों का आवश्यकतानुसार मिला-जुला रूप प्रयोग करके भी शिक्षक गद्य शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है। विभिन्न विधियों के मिले-जुले रूप को ही संयुक्त विधि कहा जाता है। शिक्षक भाषायी कौशलों का ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्या व विश्लेषण प्रणाली का उपयोग कर सकता है। विधियों के संयुक्त रूप का प्रयोग करके बच्चों को गद्य पाठों की शिक्षा बहुत ही रोचक व प्रभावशाली ढंग से दी जा सकती है।

इस प्रकार शिक्षक गद्य-शिक्षण के लिए अपनी आवश्यकता के अनुसार किसी एक विधि, दो विधियों अथवा सभी विधियों का संयुक्त रूप से प्रयोग कर सकता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

■ निबंध शिक्षण

निबंध शिक्षण के उद्देश्य

1. छात्रों की अभिव्यक्ति का विकास करना।
2. पठन की कुशलता व गति का विकास करना।
3. पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
4. निरीक्षण, बोध, कल्पना व विवेचना शक्ति का विकास करना।
5. शब्द, सूक्ति, मुहावरे व लोकोक्तियों का ज्ञान कराना।
6. भाषा के व्याकरण पक्ष का ज्ञान कराना।
7. गद्य की विभिन्न शैलियों का ज्ञान कराना।
8. निबंध के विभिन्न भेदों का ज्ञान कराना।
9. सृजनात्मकता एवं साहित्यिक रचनाएँ करने की क्षमता का विकास करना।
10. मानव जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान कराना।
11. साहित्य-अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
12. चित्त-वृत्तियों का परिमार्जन करना।
13. देश, जाति, धर्म आदि के प्रति आदर भाव उत्पन्न करना।
14. सामाजिक आदर्शों का पालन करना।
15. कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचार व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
16. विषय सामग्री को तार्किक क्रम से प्रस्तुत करने के कौशल का विकास करना।
17. विचारों की एकता बनाए रखने की कुशलता उत्पन्न करना।

■ कहानी शिक्षण

कहानी गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। यह एक लघु वर्णनात्मक गद्य रचना है जिसमें वास्तविक जीवन को कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पूरे जीवन की अपेक्षा जीवन के एक अंश पर विशेष बल दिया जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार "कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंश या एक मनोभाव को प्रकट करना लेखक का उद्देश्य होता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथानक सब उसी एक भाव को प्रकट करते हैं।"

डॉ. श्याम सुन्दर दास के अनुसार "कहानी एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर चलने वाला नाटकीय आख्यान है।"

कहानी शिक्षण के उद्देश्य

जहाँ जीवन है वहाँ कहानी भी अवश्य है। कहानी कहने की परम्परा उतनी ही पुरानी है, जितना हमारा जीवन। जैसे-जैसे मानव का विकास होता गया उसके भाव व विचार बदलते गए और उनके साथ-ही-साथ उसकी कहानियों के रूप व उद्देश्य भी बदलते गए। *कहानी सुनाने व कहानी पढ़ाने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—*

1. छात्रों का स्वस्थ मनोरंजन करना।
2. छात्रों में ध्यानपूर्वक सुनने व सुनकर अर्थ ग्रहण करने के कौशल को विकसित करना।
3. छात्रों को स्वयं कहानी कहने एवं मौखिक रूप से विचारों को व्यक्त करने के योग्य बनाना।
4. छात्रों को सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों व व्यंग्योक्तियों का ज्ञान कराना।
5. छात्रों में विचार, कल्पना, तर्कशक्ति व स्मरणशक्ति का विकास करना।
6. छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
7. छात्रों को स्वयं कहानी की रचना करने के लिए प्रेरित करना।

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण का मूल्यांकन

मूल्यांकन की परिभाषा

1. डॉ. आर.पी.देवदास के अनुसार "मूल्यांकन के अन्तर्गत सीखने के साक्ष्यों का संकलन, उन साक्ष्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण तथा उसके आधार पर यह निर्णय लेना कि जो कुछ सिखाया गया है, उसका संख्यात्मक और गुणात्मक स्तर क्या है, सम्मिलित होता है।"
2. सी.सी. रॉस के अनुसार "मूल्यांकन का प्रयोग बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व अथवा शिक्षा की समूची स्थितियों की जाँच प्रक्रिया के लिए किया जाता है।"

मूल्यांकन की विशेषताएँ

1. **वैधता**—अभिप्राय-सापेक्षता को वैधता कहा जाता है। किसी भी प्रकार के शिक्षण के कुछ उद्देश्य होते हैं। इन उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक हुई है, इसके लिए मूल्यांकन करते हैं। जिस उद्देश्य का मूल्यांकन करना हो, उस उद्देश्य का यदि मूल्यांकन हो जाता है तो उन साधनों को वैध साधन कहा जाता है।
2. **विश्वसनीयता**—विश्वसनीयता मूल्यांकन का आवश्यक गुण है। विश्वसनीयता का अर्थ अविचलता है, अर्थात यदि किसी मूल्यांकन को समान परिस्थितियों में पुन: आयोजित किया जाए, तो छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों में विचलन नहीं होता। इसमें एक ही जाँच पत्र कई बार दिए जाने के पर भी परिणाम में एकरूपता बनी रहती है।
3. **वस्तुनिष्ठता**—वस्तुनिष्ठता का अर्थ है- व्यक्तिनिष्ठ तत्त्वों का अभाव। परीक्षा के इस गुण के अनुसार, रुचियों, पसंद तथा नापंसद, पूर्वाग्रहों एवं पक्षपातों का प्रभाव नहीं पड़ता। इसमें परीक्षक मनमानी नहीं कर सकता। सभी प्रश्नों के उत्तर सुनिश्चित होते हैं।
4. **व्यापकता**—उत्तम परीक्षा व्यापक होती है, अर्थात् उसका क्षेत्र संकुचित नहीं होता। इस गुण के अनुसार, परीक्षा में प्राय: सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की समस्त इकाइयों के सभी पक्षों पर प्रश्न पूछे जाते हैं। छात्र पाठ्यक्रम में निर्धारित सम्पूर्ण विषय-वस्तु का विस्तृत व गहन अध्ययन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। परिणामत: वे उच्च स्तर का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

5. **विभेदीकरण**—मूल्यांकन मे विभेदीकरण का गुण होना परम आवश्यक है। इस गुण के द्वारा ही मूल्यांकन से ही किसी कक्षा के उच्च, साधारण व निम्न योग्यता वाले छात्रों में भेद किया जा सकता है।

मूल्यांकन का महत्त्व एवं आवश्यकता

शिक्षा में मूल्यांकन के महत्व एवं आवश्यकता को प्रतिपादित करने वाले कुछ बिन्दु इस प्रकार हैं—

1. **उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक**—छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अध्यापक शिक्षक कार्य करता है। मूल्यांकन के द्वारा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाँच की जाती है।
2. **उपयोगी शिक्षण विधियों के चयन में सहायक**—शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक छात्रों को विभिन्न विधियों से अधिगम अनुभव कराते हैं। ये शिक्षण विधियाँ कितनी सफल रहीं, इस बात की जानकारी मूल्यांकन से ही होती है।
3. **छात्रों की प्रगति की जानकारी**—शिक्षक विद्यालय में छात्रों को जो भी विषयगत ज्ञान देते हैं, मूल्यांकन से इस बात का पता चलता है कि बच्चों ने उसे कितना ग्रहण किया है।
4. **छात्रों के वर्गीकरण में सहायक**—मूल्यांकन से छात्रों के उपलब्धि स्तर की जानकारी मिल जाती है जिसके आधार पर शिक्षक को उन्हें अलग-अलग वर्गों में विभाजित करने में सहायता मिलती है।
5. **निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा**—मूल्यांकन के द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि कौन-सा विद्यार्थी भाषा के किस क्षेत्र में कमजोर है और उसकी कमजोरी का क्या कारण है तथा इसके पश्चात् इस रिक्त का उपचार किया जाता है।

मूल्यांकन के उद्देश्य

1. वर्तमान परीक्षा-प्रणाली में सुधार करना।
2. नवीन परीक्षा प्रणालियों की समुचित व्याख्या करना।
3. विद्यार्थियों की कार्य-पद्धति की जाँच करना।
4. विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान की जाँच करना।
5. विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं की जानकारी प्राप्त करना।
6. व्यक्तिगत रूप से छात्रों को निर्देशन-पूर्व सहायता प्रदान करना।
7. उपचारात्मक शिक्षा की नवीन योजनाओं को कार्यान्वित करना।
8. मूल्यांकन द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पाठ्यक्रम में समुचित परिवर्तित करना।
9. शिक्षण विधियों की उपादेयता तथा सीमाओं का ज्ञान प्राप्त करना।

मापन का अर्थ

कुछ शिक्षक भ्रमवश मापन और मूल्यांकन को एक-दूसरे का पर्यायवाची मान लेते हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। मापन मुख्यत: आँकड़े एकत्रित करने से सम्बन्धित होता है। यह विद्यार्थियों के प्रदर्शन का संख्यात्मक अंकन होता है। इसका मुख्य उद्देश्य परिणाम को अंकों में प्रदर्शित करना है। इसमें विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्य को अंकों के रूप में मापा जाता है।

मापन और मूल्यांकन में अन्तर

संक्षिप्त रूप से मापन और मूल्यांकन में निम्नलिखित अन्तर है—

क्र.सं.	मापन	मूल्यांकन
1.	मापन एक संकुचित व कम समन्वित धारणा है।	मूल्यांकन एक व्यापक एवं अधिक समन्वित धारणा है।
2.	यह मात्रात्मक प्रक्रिया है।	यह मात्रात्मक व गुणात्मक प्रक्रिया है।
3.	विषयवस्तु की उपलब्धि पर बल	व्यक्तित्व एवं शिक्षा के उद्देश्यों पर बल
4.	यह मूल्यांकन के लिए केवल आवश्यक आँकड़े उपलब्ध कराता है।	मूल्यांकन में मापन से प्राप्त आँकड़ों का प्रतिपादन व विश्लेषण किया जाता है।
5.	इसमें अधिक मेहनत अपेक्षित है।	इसमें अधिक मेहनत व समय अपेक्षित है।
6.	इसमें केवल संज्ञानात्मक पक्ष का मापन सम्भव है।	इससे संज्ञानात्मक व असंज्ञानात्मक दोनों पक्षों की जाँच सम्भव है।
7.	यह तुलनात्मक अध्ययन के लिए उपयोगी नहीं है।	यह तुलनात्मक अध्ययन के लिए उपयोगी है।
8.	यह मूल्यांकन का ही अंग है।	इसमें मापन के साथ-साथ श्रेणी को भी बताया जाता है।
9.	यह एक समय में केवल एक पक्ष का ही मापन करता है।	एक ही समय विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन कर लेता है।
10.	इसका उद्देश्य केवल मापन है।	इसका उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है।
11.	इसमें किसी योग्यता विशेष को जाँचने वाली व्यक्तित्व परीक्षण, बुद्धि-परीक्षण, उपलब्धि, परीक्षण-जैसी तकनीकों को उपयोग में लाया जाता है।	इसमें मापन में प्रयुक्त तकनीकों के अतिरिक्त व्यवहार परिवर्तन आदि के मूल्यांकन के लिए पर्यवेक्षण, साक्षात्कार-जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

■ परीक्षा व मूल्यांकन में अन्तर

- मूल्यांकन का क्षेत्र परीक्षा से विस्तृत है।
- परीक्षा बालक की बौद्धिक क्षमता की स्थिति को बताती है जबकि मूल्यांकन उसकी बौद्धिक क्षमता को बताने के साथ-साथ उस स्थिति के कारणों तथा उसके सुधारने के उपायों पर भी विचार करता है।

परीक्षा और मूल्यांकन के अन्तर को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है—

क्र.सं.	परीक्षा	मूल्यांकन
1.	परीक्षा केवल संज्ञानात्मक पक्ष अर्थात् ज्ञानार्जन की ही जाँच करती है।	मूल्यांकन के द्वारा बालक के संज्ञानात्मक व असंज्ञानात्मक दोनों पक्षों, अर्थात् छात्रों के ज्ञान, कौशल, रुचि, अभिरुचि आदि सभी पक्षों की जाँच की जाती है।
2.	परीक्षा विषय केंद्रित अर्थात् बालक की विषयगत योग्यता की ही जाँच करती है।	मूल्यांकन उद्देश्य केन्द्रित, अर्थात् शिक्षा की समूची परिस्थितियों की जाँच करता है।
3.	परीक्षा संख्यात्मक व परिणात्मक होती है, अर्थात् यह केवल अंकों का खेल है।	मूल्यांकन गुणात्मक होता है, अर्थात् यह छात्र के चहुँमुखी विकास की जाँच करता है।
4.	परीक्षा अन्य कई साधनों की भांति मूल्यांकन का एक साधन मात्र है।	मूल्यांकन एक स्वतंत्र व विस्तृत प्रक्रिया है।
5.	परीक्षा में मूल्यांकन का समावेश नहीं है।	मूल्यांकन में परीक्षा का पूर्णतः समावेशन होता है।
6.	परीक्षा एक निश्चित अंतराल के बाद होती है: जैसे-वार्षिक, छमाही, त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक आदि अर्थात् इसकी अवधि निश्चित होती है।	मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है अर्थात् यह प्रतिदिन, प्रतिपल चलने वाली प्रक्रिया है। अर्थात् इसकी अवधि निश्चित नहीं है।
7.	परीक्षा कम समय की प्रक्रिया होती है, अर्थात् कुछ घण्टों में ही समाप्त हो जाती है।	मूल्यांकन एक लम्बी प्रक्रिया है। अर्थात् मूल्यांकन पूरे वर्ष भर चलता रहता है।
8.	परीक्षा में मौखिक, लिखित व प्रायोगिक प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।	मूल्यांकन में निरीक्षण, पर्यवेक्षण, साक्षात्कार, रेटिंग स्केल, संचित अभिलेख आदि प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।
9.	परीक्षा शिक्षण के उपरांत ली जाती है।	मूल्यांकन शिक्षण के दौरान भी और शिक्षण के उपरांत भी होता है।
10.	परीक्षा का उद्देश्य छात्रों की कमियों का पता लगाना होता है।	मूल्यांकन छात्रों के साथ-साथ अध्यापकों की कमियों का पता लगाकर उनका उपचार भी करता है।
11.	परीक्षा के द्वारा व्यक्तित्व की एकांगी जाँच होती है।	मूल्यांकन से सम्पूर्ण व्यक्तित्व की जाँच सम्भव होती है।
12.	परीक्षा एक सामूहिक प्रक्रिया अर्थात् एक साथ बहुत से बच्चों की परीक्षा ली जाती है।	मूल्यांकन में समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत मूल्यांकन पर बल होती है।
13.	परीक्षा में औपचारिकता होती है।	मूल्यांकन औपचारिक व अनौपचारिक दोनों प्रकार का होता है, अर्थात् यह स्कूल के अन्दर भी और बाहर होता रहता है।
14	परीक्षा एक जटिल प्रक्रिया है।	मूल्यांकन एक सहज प्रक्रिया है।
15.	परीक्षा अपने आप में एक पूर्ण प्रक्रिया नहीं है।	मूल्यांकन अपने आप में एक पूर्ण प्रक्रिया है।
16.	परीक्षा का क्षेत्र संकुचित है।	मूल्यांकन का क्षेत्र विस्तृत है।

■ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

'सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन', मूल्यांकन की वह व्यवस्था है जो सीखने की प्रक्रिया में आकलन की निरंतरता बनाए रखने पर जोर देती है। इसमें सीखने की अभिरुचियाँ एवं विकास के सभी पक्ष सम्मिलित होते हैं।

ऐसी प्रणाली है जिसमें विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास के सभी पक्ष शामिल हैं। इसमें एक ओर मूल्यांकन में निरंतर और व्यापक रूप से सीखने की प्रक्रिया का आकलन तथा व्यावहारिक रूप से समाज में सामंजस्य स्थापित करने का भी मूल्यांकन होता है।

- मूल्यांकन की प्रथम विशेषता है उसका 'सातत्य'। इसमें सातत्य अर्थात् निरंतरता पर विशेष बल दिया गया है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पूरे सत्र में चलती है ताकि विद्यार्थी सहज रूप से सीख सकें।
- मूल्यांकन की नियमितता अधिगम के अंतरालों का निदान, सुधारात्मक उपायों का उपयोग तथा स्वयं मूल्यांकन के लिए फीडबैक आदि बहुत जरूरी है।
- मूल्यांकन की दूसरी विशेषता है उसकी व्यापकता। व्यापकता से तात्पर्य है, मापित होने वाली चलराशि में अधिक से अधिक तत्वों को सम्मिलित करना अर्थात् शिक्षा के साथ-साथ सहशैक्षिक पक्षों को भी शामिल करना। इनमें क्षमताएँ, मनोवृत्तियाँ, चिन्तन, पाठ्यक्रम के साथ-साथ पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ भी शामिल हैं।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ावा देना है। यह एक लम्बी प्रक्रिया है। इसमें प्रथम सोपान अर्थात् सबसे पहले पर्यवेक्षण, वार्तालाप, चर्चा आदि विभिन्न साधनों व माध्यमों से जानकारी संकलित की जाती है। इस जानकारी को एकत्र करते समय शिक्षक को सजग रहना पड़ता है तथा उसे यह सुनिश्चित करना होता है कि जो भी सूचनाएँ एकत्रित की गई हैं, वे सही हैं। विद्यार्थी का हित-साधन ही इसके केन्द्र में होता है।
- द्वितीय सोपान में इस जानकारी को लिखित रूप से रिकॉर्ड किया जाता है। इस रिकॉर्ड का शिक्षण-अधिगम को सुधारने में पर्याप्त महत्व है।
- अन्तिम सोपान में प्रथम सोपान में एकत्रित रिकॉर्ड से अध्यापक, विद्यार्थी तथा माता-पिता मदद लेकर विद्यार्थी की उन्नति का प्रयास करते हैं।

मूल्यांकन की अन्य विधियाँ

मूल्यांकन के अन्तर्गत परीक्षा व उसके मौखिक, लिखित व प्रायोगिक भेद, मूल्यांकन के परिणामात्मक भेद हैं। मूल्यांकन में इस प्रकार की प्रविधियाँ अधिक उपयोगी, विश्वसनीय तथा वैध होती हैं। परन्तु इनके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। भाषा के कई पक्ष है जिनका मूल्यांकन इन विधियों के द्वारा किया जा सकता है।

1. **पर्यवेक्षण**—पर्यवेक्षण में छात्र के दैनिक व्यवहार एवं क्रियाओं को देखकर उनका लेखा-जोखा रखा जाता है।
2. **संचित अभिलेख पत्र**—विद्यालयों में प्रत्येक छात्र के सम्बन्ध में शैक्षिक प्रगति, मासिक परीक्षा परिणाम, उपस्थिति, स्वास्थ्य व शारीरिक विकास, पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में सहभागिता आदि का रिकॉर्ड रखा जाता है, इसी को संचित अभिलेख कहा जाता है। छात्र की प्रगति तथा कमजोरी को जानने के लिए अभिभावकों, शिक्षकों तथा प्रधानाचार्य के लिए यह अधिक उपयोगी आलेख होता है।
3. **घटनाक्रम**—इसमें बालकों के व्यवहार से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनाओं तथा कार्यों का वर्णन किया जाता है। इसमें छात्रों की रुचियों तथा रूझानों को उत्पन्न करने वाले घटकों का भी उल्लेख रहता है। उन घटनाओं में छात्र की क्या भूमिका रही इस बात का भी उल्लेख किया जाता है।
4. **गृहकार्य**—सामान्यतः गृहकार्य उस कार्य को कहते हैं जो विद्यालय के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होता है। जिसे अध्यापक कक्षा में पाठ पढ़ाने के बाद उस विषय का घर पर अभ्यास करने के लिए देते हैं। गृहकार्य के रूप में दिए गए कार्य जिसमें प्रश्नों के उत्तर, पाठ का सार, शब्दों, मुहावरों व लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग, स्मरणीय अंश को कक्षा में सुनाना आदि क्रियाओं के आधार पर भी शिक्षक छात्र की भाषागत योग्यताओं का मूल्यांकन कर सकता है।

निदानात्मक शिक्षक के महत्त्व

आधुनिक शिक्षण में निदान एवं उपचारी शिक्षण एक नवीन प्रयोग है। इससे उन विद्यार्थियों को विशेष लाभ है जिनके सीखने में, किन्ही कारणों से, कुछ दोष आ जाते हैं। इससे सीखने के दोषों एवं उनके कारणों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। इससे विद्यार्थियों की कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं।

निदानात्मक शिक्षण के शैक्षिक महत्त्व की दृष्टि से निम्नलिखित बातें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

1. इससे विद्यार्थी और अध्यापक दोनों ही दोषों एवं समस्याओं से परिचित हो जाते हैं।
2. दोष व समस्या से परिचित होने के बाद उसकी रोकथाम इसके माध्यम से होती है।
3. इससे विद्यार्थी को क्रियाशील एवं अध्ययनशील होने की प्रेरणा मिलती है।
4. इसके माध्यम से अध्यापकों को विद्यार्थियों के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।
5. इससे बालकों की गंदी आदतों का परिष्कार हो जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण के महत्त्व

भाषा में शैक्षणिक निदान व उपचार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी उपेक्षा करने से न केवल भाषा-शिक्षा अपितु पूरी शिक्षा-व्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है। भाषा शिक्षण में दुष्प्रभाव से बचने के लिए शैक्षणिक निदान एवं उपचार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

1. उपचारात्मक शिक्षक से विद्यार्थी अपनी अशुद्धियों को समझने लगते हैं तथा भविष्य में उनके प्रति सावधान हो जाते हैं।
2. इससे अध्यापक विद्यार्थियों के दोषों का ज्ञान प्राप्त करके उन्हें सुधारने के लिए प्रयत्नशील होते हैं।
3. इससे शिक्षकों को भी अपनी त्रुटियों का ज्ञान होता है। उन त्रुटियों को दूर करके वे अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने का प्रयास करते हैं।
4. इससे विद्यार्थियों की विभिन्न कठिनाइयों; जैसे-मानसिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक, शारीरिक आदि को दूर करने में सहायता मिलती है।
5. इससे विद्यार्थियों को बुरी आदतों को दूर करने तथा अच्छी आदतों को अपनाने में मदद मिलती है।
6. उपचारात्मक शिक्षण से विद्यार्थियों को हीन-भावना से बचाकर उनमें आत्मविश्वास विकसित किया जा सकता है।
7. इससे विद्यार्थियों की अंतर्निहित प्रतिभा को विकसित किया जा सकता है।

उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करना तथा इनको दूर करके कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के बहुमूल्य समय को नष्ठ होने से बचाना।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

2. विद्यार्थियों की ज्ञान-प्राप्ति के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों एवं समस्याओं को दूर करना।
3. विद्यार्थियों की संवेगात्मक समस्याओं का समाधान करके उनको असमायोजन से बचाना तथा उनको मानसिक रूप से स्वस्थ तथा शिक्षण ग्रहण करने के योग्य बनाना।
4. विद्यार्थियों को सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर करना अर्थात् निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना।
5. विद्यार्थियों को भाषा-सम्बन्धी दोषों से परिचित कराना तथा उनके प्रति सावधान करना तथा दोषों को दूर करने के लिए प्रेरित करना।
6. शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को अपनी शक्ति व क्षमता के अनुसार शैक्षिक प्रगति के अवसर प्रदान करना।

उपचारात्मक शिक्षण-विधियाँ

विद्यार्थियों की भाषा-सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने के लिए प्राय: निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाता है—

1. व्यक्तिगत विधि 2. सामूहिक विधि

1. व्यक्तिगत विधि

(i) व्यक्तिगत विधि में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि प्रत्येक बालक एक-दूसरे से भिन्न होता है। अत: व्यक्तिगत उपचार के लिए बालक के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर को आधार बनाना चाहिए।

(ii) व्यक्तिगत उपचार की सफलता के लिए आवश्यक है कि उपचाराधीन विद्यार्थी की समस्याओं एवं कठिनाइयों का गम्भीरता से अध्ययन किया जाए। उसकी विभिन्न परिस्थितियों तथा विवशताओं को ध्यान में रखा जाए। अध्ययन व विश्लेषण में चूक से उलटा परिणाम भी निकल सकता है।

(iii) उपचार करते समय परिस्थितियों, मजबूरियों एवं वातावरण का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

(iv) उपचार हेतु दण्ड आवश्यक नहीं है। प्रेम व सहानुभूति के साथ व्यक्तिगत उपचार करना चाहिए।

(v) कक्षा में विद्यार्थी अलग-अलग ढंग से गलतियाँ करते हैं, अत: उपचार भी अलग-अलग ढंग से किया जाना चाहिए।

2. सामूहिक विधि

- सामूहिक उपचार विधि का अर्थ है- सभी विद्यार्थियों का एक स्थान पर उपचार करना। कुछ अशुद्धियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें अधिकांश विद्यार्थी करते हैं। अध्यापक विद्यार्थियों की कॉपियाँ देखकर या उनके वाचन का निरीक्षण करके ऐसी गलतियों को ढूँढ़ निकालता है। ये अशुद्धियाँ पिछली कक्षा में गलत शिक्षण के कारण, भ्रमपूर्ण धारणाओं के कारण या परिवेश के कारण पैदा हो सकती हैं।
- इन गलतियों का सामूहिक उपचार करने से सभी छात्रों को लाभ पहुँच सकता है।
- सामूहिक उपचार की एक और विधि भी है जिसमें समूची कक्षा की अशुद्धियों का एक साथ उपचार नहीं किया जाता अपितु अशुद्धियों के आधार पर कक्षा को तीन-चार वर्गों में बाँटा जाता है। फिर प्रत्येक वर्ग की अशुद्धियों का सामूहिक उपचार किया जाता है। प्रत्येक वर्ग को अतिरिक्त समय देकर उनके विभिन्न दोषों का उपचार करके उनको भाषा के शुद्ध प्रयोग का अभ्यास कराया जाता है।
- श्रम साध्य होने पर भी यह विधि उपयोगी है। इस विधि में छात्र एक-दूसरे की सहायता भी कर सकते हैं।
- उपचारात्मक शिक्षण का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों की अशुद्धियों का निवारण करना है।
- उपचार करते समय अध्यापक को विद्यार्थियों के प्रति प्रेम तथा सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए।
- विद्यार्थियों को प्रेरित व प्रोत्साहित करते रहना चाहिए। कठिनाइयाँ दूर होते ही विद्यार्थियों की प्रगति आरम्भ हो जाती है।

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण की सहायक सामग्री

प्राय: देखा जाता है कि शिक्षक पढ़ाते समय श्यामपट्ट, प्रोजेक्ट, कम्प्यूटर, किताबें, चार्ट आदि का प्रयोग करता है। शिक्षक इनका प्रयोग बच्चों के ज्ञान को स्थाई करने के लिए करता है। शिक्षण सहायक सामग्री के माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है। शिक्षक शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग नहीं करता तो शिक्षा उबाऊ (Boring) हो जाती है।

सहायक सामग्री के प्रकार

शिक्षण सामग्री को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं—

1. श्रव्य सामग्री
2. दृश्य सामग्री
3. दृश्य-श्रव्य सामग्री

1. श्रव्य सामग्री—जो सामग्री हम सुनने के लिए प्रयुक्त करते हैं, वह श्रव्य सामग्री कहलाती है। उदाहरण-रेडियो, MP3, टेपरिकॉर्डर, लिग्वाफोन, ग्रामोफोन, माइक्रोफोन आदि।

2. दृश्य सामग्री—जो सामग्री केवल देखने के काम आती है, दृश्य सामग्री कहलाती है। उदाहरण-पुस्तकें, श्यामपट्ट, माडल, समाचार पत्र, शब्दकोष (Dictionary), एटलस, मानचित्र, सारणी, एन्साइक्लोपीडिया (Encyclopedia), एपीडाईस्कोप (Epidiascope), चार्ट, स्लाइड (Slide), ओवर हैड प्रोजेक्टर (O.H.P.)।

3. दृश्य-श्रव्य सामग्री (Audio Visual Aids)—टी.वी., कम्प्यूटर (Computer), वीडियों टेक्स्ट (Video text), वीडियों डिस्क (Video Disk), टेली कान्फ्रेन्सिंग (Tele Conferencing), सिनेमा।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

प्रश्नावली

1. ... एक संप्रेषण का यंत्र अथवा उपकरण है, जो विशिष्ट पैटर्न और प्रणालियों के अनुरूप होती है। (DSSSB PRT, 2018)

(1) पत्र (2) संकेत
(3) भाषा (4) हाव-भाव

व्याख्या *(3)* भाषा एक सम्प्रेषण का यंत्र अथवा उपकरण है, जो विशिष्ट पैटर्न और प्रणालियों के अनुरूप होती है।

- भाषा सम्प्रेषण का साधन होने के साथ-साथ व्यक्ति के भाव बोध का साधन भी है। भाषा ही व्यक्ति के विचारों, समझ एवं सोच को आकार प्रदान करती है।
- भाषा व्यक्ति के स्मृति कोष एवं चिन्तन प्रक्रिया का आधार है। भाषा ही व्यक्ति के बाह्य जगत और भाव बोध के मध्य सेतु का कार्य करती है। भाषा के अन्तर्गत मौखिक, लिखित एवं सांकेतिक भाषा सम्मिलित है।

2. एक भाषा जो हमारे घर, स्कूल और सामाजिक परिवेश में संप्रेषण के लिए प्राथमिक रूप से प्रयुक्त होती है, वह ..... कहलाती है। (DSSSB PRT, 2018)

(1) मातृभाषा (2) प्रथम भाषा
(3) घरेलू भाषा (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या *(2)* एक भाषा जो हमारे घर, स्कूल और सामाजिक परिवेश में सम्प्रेषण के लिए प्राथमिक रूप से प्रयुक्त होती है, वह प्रथम भाषा कहलाती है।

- प्रथम भाषा के अन्तर्गत घर की भाषा, बड़े कुनबे की भाषा, पास-पड़ोस की भाषा आदि सम्मिलित की जाती है। जिसे बच्चा अपने घर-परिवार और समाज के वातावरण से स्वाभाविक रूप से ग्रहण करता है।
- बालक में भाषा की क्षमता जन्मजात होती है जिसका विकास बालक के दैनिक अनुभवों से होता है। बालक आरम्भिक विद्यालय जाने से पूर्व ही भाषा की जटिलताओं एवं नियमों को आत्मसात् कर चुके होते हैं तथा भाषा के संदर्भ में पूर्ण भाषिक क्षमता रखते हैं।
- प्रथम भाषा का स्थानान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होता है।

3. बोलने और लिखने पर जोर निम्नलिखित में से किसके लिए दिया जाना चाहिए? (DSSSB PRT, 2018)

(1) प्रथम भाषा
(2) द्वितीय भाषा
(3) तृतीय भाषा
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या *(1)* प्रथम भाषा के लिए बोलने और लिखने पर जोर दिया जाना चाहिए।

- प्राथमिक कक्षाओं के अन्तर्गत विद्यार्थियों को घर एवं विद्यालय दोनों जगह बोलकर लिखने की आदत डाली जाती है। इस प्रकार की गतिविधि से विद्यार्थी के उच्चारण में सुधार के साथ-साथ लिखने की प्रक्रिया भी सुचारू रूप से चलती रहती है।
- **भाषा कौशल के विकास क्रम :** सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना।
- सही प्रकार से उच्चारण अर्थात बोलना ही सही प्रकार से लिखने का एक कारक बनता है। इसीलिए प्रथम भाषा के लिए पहले सही प्रकार से व्याकरणिक नियमानुसार बोलने और तत्पश्चात् लिखने पर बल दिया जाना चाहिए।

4. विद्यार्थी द्वितीय भाषा में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट और जुड़कर लिखने में ..... से पहले सक्षम होने चाहिए। (DSSSB PRT, 2018)

(1) निम्न प्राथमिक स्तर (2) उच्च प्राथमिक स्तर
(3) उच्च विद्यालय स्तर (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या *(2)* विद्यार्थी द्वितीय भाषा में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट और जुड़कर लिखने में उच्च प्राथमिक स्तर से पहले सक्षम होने चाहिए।

- प्रारंभ से ही विद्यार्थियों में बहुभाषित माहौल स्थापित करने से उसके दुष्प्रभाव सामने आ सकते है जैसे बालक का अपनी भाषा का क्षरण, तथा अन्य भाषाओं को भी न समझ पाने का बोझ। उच्च प्राथमिक स्तर अर्थात् कक्षा 6, 7, 8, 9 में यह दुष्परिणाम दृष्टिगत होते हैं अतः बालक के प्रारंभिक वर्षो में ही बालक की प्रथम एवं द्वितीय यानि अंग्रेजी भाषा शिक्षण उचित प्रकार से किया जाना चाहिए ताकि उच्च प्राथमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थी द्वितीय भाषा में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट व उसमें लिखने में सक्षम हो सके।
- भारतीय संविधान भारत के प्रत्येक बच्चे को आठ साल (6-14 वर्ष) की शिक्षा की गारन्टी सुनिश्चित करता है जिसके अनुसार अंग्रेजी भाषा (द्वितीय भाषा) में सक्षमता चार वर्षों की अवधि में प्राप्त करना सम्भव होना चाहिए।

5. ... एक संज्ञा या सर्वनाम से पूर्व आता है (DSSSB PRT, 2018)

(1) पूर्वसर्ग (2) विस्मयादि बोधक
(3) क्रिया-विशेषण (4) समुच्चय बोधक

व्याख्या *(1)* पूर्वसर्ग एक संज्ञा या सर्वनाम से पूर्व आता है।

- सम्बन्ध सूचक अव्यय या पूर्वसर्ग वे शब्द है जो किसी वाक्य में आए हुए संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सम्बन्धित करके व्यक्त करते हैं।

उदाहरणस्वरूप– पर्स मेज **पर** रखा है।
Purse is **on** the table.

6. निम्नलिखित में से कौन-सा एक निश्चयात्मक शब्द नहीं है? (DSSSB PRT, 2018)

(1) आर्टिकल्स (2) डेमॉन्स्ट्रेटिव्स
(3) पजेसिव्स (4) विशेषण

व्याख्या *(4)* विशेषण एक निश्चयात्मक शब्द नहीं है।

- अंग्रेजी में डिटरमिन्रस (Determinars in English)
- आर्टिकल्स (Articles)
  Definite Article : The
  Indefinite Articles : A, AN
- डेमॉन्स्ट्रेटिव (Demonstratives) : This, that, these etc.

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- पसेसिव्स डिटरमिन्स (Possessive : Its, His, her, my, your, our etc.
- विशेषण (Adverb) : Slowly, Beautifuly, Londly etc.
- **विशेषण :** संज्ञा, सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है। जैसे-

गुलाब लाल है।
↓ ↓
संज्ञा (विशेष्य) विशेषण

- विशेषण किसी शब्द या वस्तु की निश्चितता न बताकर विशेषता बताता है।

7. भाषाविदों के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है? **(DSSSB PRT, 2014)**
(1) शब्द और वाक्य
(2) ध्वनि प्रणाली और वाक्य
(3) शब्दकोष और व्याकरण
(4) ध्वनि प्रणाली और व्याकरण

व्याख्या *(3)* शब्दकोष और व्याकरण भाषाविदों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- भाषा के उचित सम्प्रेषण के लिए भाषा की सही अभिव्यक्ति आवश्यक है। भाषा की सही अभिव्यक्ति के लिए भाषा सम्बन्धित शब्दों का चयन आवश्यक है। सही शब्दों के चयन के लिए शब्दों का संकलन आवश्यक है। इसीलिए भावों की अभिव्यक्ति के लिए शब्दकोष एवं सही व्याकरण का होना आवश्यक है।

8. कितनी भाषाओं में तीन से कम स्वर हैं? (DSSSB PRT, 2014)
(1) कोई भाषा नहीं (2) बहुत कम भाषाएँ
(3) बहुत-सी भाषाएँ (4) सभी मौजूदा भाषाएँ

व्याख्या *(2)* ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसमें तीन से कम स्वर है।
- हिन्दी में 11, अंग्रेजी में 5, स्पेनिश में 8 एवं अरबी में 3 स्वर है।

9. यह निश्चित है कि भाषा ..... में बहुत गहरे बैठी हुई है। **(DSSSB PRT, 2014)**
(1) मानव मस्तिष्क
(2) समाज
(3) लोगों
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या *(2)* यह निश्चित है कि भाषा समाज में बहुत गहरे बैठी हुई है।
- भाषा और समाज का सम्बन्ध अविच्छेद माना गया है। भाषा एवं समाज दोनों अपने अस्तित्व के लिए एक-दूसरे पर पूर्णतः निर्भर करते है। प्रत्येक समाज की अपनी एक भाषा, बोली एवं लिपि होती है।
- समाज ही व्यवहार, भाषा के रूप, व्याकरण, उसका उच्चारण, अर्थगत् एवं लिपिगत् संरचनाओं के नियम आदि का निर्धारण करता है। भाषा के नियमों का पालन करते हुए समाज अपना सर्वांगीण विकास करता है। अतः भाषा एवं समाज एक-दूसरे से गहराई के साथ सम्बन्धित है तथा कहा जाता है कि भाषा समाज में गहरी बैठी हुई है।

10. भाषा वह माध्यम भी बन जाती है जिसमें विद्यालय में शिक्षा दी जा रही है और इस प्रकार ..... के रूप में चिन्हित होती है। **(DSSSB PRT, 2014)**
(1) साहित्य की भाषा
(2) शास्त्रीय भाषा
(3) मानक भाषा
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या *(3)* भाषा वह माध्यम भी बन जाती है जिसमें विद्यालय में शिक्षा दी जा रही है और इस प्रकार मानक भाषा के रूप में चिन्हित होती है।
- मानक भाषा किसी भाषा की वह भाषा प्रयुक्ति या भाषिक होती है जो किसी समुदाय, राज्य या शब्द में सम्पर्क भाषा का दर्जा रखती है।

11. निम्नलिखित में से कौन-सा द्विभाषी विधि का एक सिद्धांत नहीं है? **(DSSSB PRT, 2014)**
(1) केवल अध्यापक मातृभाषा का प्रयोग करता है
(2) शब्दशः अनुवाद किया जाता है
(3) यह केवल प्रत्यक्ष विधि है
(4) कृत्रिम स्थिति बनाने की आवश्यकता है

व्याख्या *(3)* द्वि-भाषी विधि केवल प्रत्यक्ष विधि है। इसे द्वि-भाषी सिद्धान्त के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं किया जाता है।
- द्वि-भाषी विधि के जन्मदाता सी. जे. डोडसन (C.J. Dodson) है। सी. जे. डोडसन ने विदेशी भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में द्वि-भाषी शिक्षण पद्धति का विकास किया था।
- द्वि-भाषी शिक्षण पद्धति में मूल विषय सामग्री को चित्रपट्टी (Projector) के साथ संवाद स्थापित करके शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है।
- द्वि-भाषी शिक्षण विधि के अन्तर्गत विद्यार्थियों को मुद्रित पाठ आरम्भ में ही उपलब्ध करा दिया जाता है जिससे विद्यार्थियों को उनके अर्थ को समझने में कठिनाई न हो सके। द्वि-भाषी शिक्षण के अन्तर्गत मातृभाषा व्याकरणिक संरचनाओं को समझाने में सहायक की भूमिका निभाती है।

12. एक पांच वर्षीय बच्चा रयान, "r" अक्षर को पहचानने में सक्षम है। वह "y", "a" और "n" से भी बहुत परिचित है। इस पद्धति को किस रूप में जाना जाता है? **(DSSSB PRT, 2014)**
(1) वर्णमाला ज्ञान प्रक्रिया
(2) स्वयं के नाम का लाभ
(3) ध्वनि जागरुकता सूचक
(4) आकस्मिक साक्षरता परिकल्पना

व्याख्या *(2)* एक पांच वर्षीय बच्चा रयान, "r" अक्षर को पहचानने में सक्षम है। वह "y", "a" और "n" से भी बहुत परिचित है। इस परिस्थिति में स्वयं के नाम का लाभ उठा रहा है।
- उपर्युक्त उदाहरण थॉर्नडाइक के सीखने के 5 नियमों में से एक अनुरूपता या सादृश्यता के नियम से सम्बन्धित है।
- इस नियम के अनुसार, पूर्व ज्ञान वर्तमान ज्ञान के निर्माण में सहायक होता है। अर्थात् व्यक्ति किसी नई परिस्थिति में वैसी ही अनुक्रिया करता है जो उसके पूर्व अनुभव या पहले सीखी गई अनुक्रिया के सदृश्य होता है।
- इसे हस्तांतरण का सामान्य तत्व सिद्धान्त (Common Elements Theory) भी कहा जाता हैं।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

13. एक बच्चा 'CAT' शब्द को उसके घटक ध्वनिग्राम /C/ + /A/ + /T/ में करने में खंडित करने में सक्षम है। वह किसके गहरे स्तर का प्रदर्शन करता है? **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) ध्वनि जागरुकता (2) प्रिंट कार्य
(3) विलोपन (4) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या *(1)* एक बच्चा "CAT" शब्द को उसके घटक ध्वनिग्राम /C/ + /A/ + /T/ में करने में खंडित करने में सक्षम है तो वह ध्वनि जागरूकता के गहरे स्तर का प्रदर्शन करता है।
- बच्चे के भाषा-विकास के लिए आवश्यक है कि बच्चे में श्रवण शक्ति अर्थात् सुनकर ध्वनि के प्रति समझ का विकास हो।
- ध्वनि जागरूकता (सुनना) भाषा कौशल के लिए महत्वपूर्ण है।

14. किस भाषा को सभी मानव समूहों यहाँ तक कि साधारण संस्कृति प्रकरण में भी पाया जाता है? **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) भाषा का विकास
(2) आदिम लोगों की भाषा
(3) मानव संचार में गैर मौखिक संकेत
(4) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या *(2)* आदिम लोगों की भाषा सभी मानव समूहों यहाँ तक कि साधारण संस्कृति प्रकरण में भी पाई जाती है।
- वर्तमान भाषा का स्वरूप आदिम भाषाओं से ही निश्चित हुआ था। आदिम भाषा ने इन भाषाओं को आधार प्रदान किया है।
- किन्तु आदिम भाषा में हीनता दृष्टिगोचर होती है और वर्तमान भाषाएँ मानकता लिए हुई हैं।

15. मानव भाषण का विकास शारीरिक परिपक्वता और व्यक्तिगत-सामाजिक उत्तेजना पर निर्भर विभिन्न प्राकृतिक चरण/चरणों के अन्तर्गत आता है। ये चरण हैं **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) चित्कार या पूर्व भाषाई मंच
(2) प्रलाप चरण और भाषण का अनुकरण
(3) ध्वनि और स्थिति की समिति द्वारा सत्य भाषण की प्राप्ति
(4) उपरोक्त सभी

व्याख्या *(2)* मानव भाषण के विकास चरणों में चित्कार या पूर्व भाषाई मंच, प्रलाप चरण और भाषण का अनुकरण, ध्वनि और स्थिति की समिति द्वारा सत्य भाषण की प्राप्ति सम्मिलित हैं।
- ध्वनि और सत्य भाषण की प्राप्ति द्वारा ही भाषा विकास प्रारम्भ होता है।
- भाषा विकास एक जटिल प्रक्रिया है।

16. बच्चे भाषा अधिग्रहण डिवाइस के साथ पैदा होते हैं, यह किसने कहा था? **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) स्किनर (2) पायगेट
(3) वाइगोट्स्की (4) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या *(4)* नॉम चोमस्की (Noam Chomsky) के भाषा विकास सिद्धान्त के अनुसार बच्चे भाषा अधिग्रहण डिवाइस के साथ पैदा होते हैं।
- इनके अनुसार बच्चों में जन्मजात तंत्रिकीय (Neurological Machanism) जैसी अवस्था होती है जिसके कारण वे वाक्य विन्यास (Syntax) को सीखते हैं।
- इस प्रक्रम को भाषा ग्रहण साधन (Language Aquisition Device (LAD)) कहते हैं।

17. ..... बच्चों के भाषा अध्ययन में एक महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है। **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) ध्वनि संयोजन के लिए अध्ययन नियम
(2) संवादमूलक पैटर्न के लिए अध्ययन नियम
(3) वयस्क भाषण की नकल
(4) वक्य संरचना के लिए अध्ययन नियम

व्याख्या *(3)* नॉम चोमस्की के अनुसार, वयस्क भाषण की नकल बच्चों के भाषा अध्ययन में एक महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है।
- वयस्कों की भाषाओं एवं उनके द्वारा प्रयुक्त वाक्यों में अनियमितता होती है। यह अनियमितता बच्चों के भाषा-विकास में अवरोध उत्पन्न करती है।
- जबकि ध्वनि संयोजन के लिए नियम, संवादमूलक पैटर्न के लिए अध्ययन नियम तथा वाक्य संरचना के लिए अध्ययन नियम भाषा अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

18. मेटा भाषाई जागरुकता **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) सोचने की क्षमता
(2) भाषा के बारे में सोचने और बात करने की क्षमता
(3) भाषा के बारे में बात करने की क्षमता
(4) अन्य दृश्यक चिह्नों से लिखने की योग्यता

व्याख्या *(2)* मेटा भाषाई जागरूकता भाषा के बारे में सोचने और बात करने की क्षमता से सम्बन्धित है।
- मेटा भाषाई जागरूकता का एक महत्वपूर्ण पहलू ध्वनि जागरूकता है। यह शब्द की ध्वनि को सुनने, पहचानने और बदलने की क्षमता है। ध्वनि जागरूकता पठन और लेखन क्षमता को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

19. आविष्कार वर्तनी क्या है? **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) पढ़ने के विकास के साथ हस्तक्षेप
(2) पारम्परिक वर्तनी का विकास
(3) बच्चों की वाक्पटुता को बढ़ाता है
(4) माता-पिता द्वारा समर्थित नहीं किया जाना चाहिए

व्याख्या *(2)* आविष्कार वर्तनी बच्चों की वाक्पटुता को बढ़ाता है।
- वर्तनी का सीधा सम्बन्ध उच्चारण से होता है। यदि उच्चारण अशुद्ध है तो वर्तनी भी अशुद्ध लिखी जाएगी।
- मातृभाषा या बोली के कारण तथा व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान की कमी के कारण उच्चारण में अशुद्धियाँ आती हैं।
- परन्तु कम अशुद्धियाँ होने से बच्चों में वाक्पटुता को बढ़ावा मिलता है।

20. ईसीएम ..... के विकासात्मक सिद्धान्त में दोनों व्यवहारिक और संज्ञानात्मक दृष्टिकोण को स्थापित करता है। **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) सामाजिक अधिग्रहण
(2) भाषा अधिग्रहण
(3) विविधता
(4) आचार संहिता

व्याख्या *(2)* ईसीएम भाषा अधिग्रहण के विकासात्मक सिद्धान्त में दोनों व्यवहारिक और संज्ञानात्मक दृष्टिकोण को स्थापित करता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

21. शिक्षण के मानक हैं **(DSSSB PRT, 2014)**

(i) संयुक्त उत्पादक गतिविधि।
(ii) भाषा का विकास एवं प्रसंगाधीन।
(iii) चुनौतीपूर्ण गतिविधियां और निर्देशात्मक वार्तालाप।

(1) i, ii और iii (2) ii और iii
(3) केवल i (4) उपरोक्त सभी

व्याख्या *(1)* प्रभावी शिक्षण के मानकों में संयुक्त उत्पादक गतिविधि, भाषा का विकास एवं प्रसंगाधीन तथा चुनौतीपूर्ण गतिविधियां और निर्देशात्मक वार्तालाप सम्मिलित हैं।

- प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों का अवधान कक्षा-कक्ष में बनाए रखता है।
- शिक्षक को चाहिए कि वह ऐसी प्रभावी रणनीतियों, क्रियाकलापों एवं गतिविधियों का आयोजन करें कि विद्यार्थियों की रुचि एवं अवधान भंग न हो और अधिगम सार्थक हो तभी प्रभावी शिक्षण सफल हो पाता है।

22. आवश्यक कौशल और दक्षता हासिल करने के तरीके में शामिल हो सकते हैं **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) स्व:शिक्षा कार्यक्रम
(2) शैक्षणिक पाठ्यक्रम
(3) सलाह और अनुशिक्षण का सम्बन्ध
(4) उपरोक्त सभी

व्याख्या *(4)* आवश्यक कौशल और दक्षता हासिल करने के तरीको में स्व:शिक्षा कार्यक्रम, शैक्षणिक पाठ्यक्रम, सलाह और अनुशिक्षण का सम्बन्ध सभी शामिल हो सकते हैं।

- आवश्यक कौशल सम्बन्धित व्यवसाय अथवा क्षेत्र आदि में सहायक होता है।

23. ..... को विश्व की व्याख्या के लिए एक शक्तिशाली उपकरण माना जाता है। अतः यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में वास्तविक अनुभव में चलाया जाना चाहिए। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) गणित (2) विज्ञान
(3) अंग्रेजी (4) भूगोल

व्याख्या *(2)* अंग्रेजी को विश्व की व्याख्या के लिए एक शक्तिशाली उपकरण माना जाता है। अतः यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में वास्तविक अनुभव में चलाया जाना चाहिए।

- अंग्रेजी को एक भूमण्डलीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। विभिन्न देशों में अंग्रेजी का शिक्षण-प्रशिक्षण में उपयोग किया जाता है। अतः यह एक शक्तिशाली उपकरण है जो विश्व की व्याख्या प्रभावपूर्ण ढंग से करने में सक्षम है।

24. हिन्दी भाषा को सीखने का पहला कदम है

(1) सुनना (2) बोलना **(DSSSB PRT, 2018)**
(3) (1) और (2) (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या *(3)* एक भाषा को सीखने का पहला कदम सुनना होता है।

- भाषा को सीखने का क्रम है-सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना। शिशु जन्म लेने के पश्चात् सर्वप्रथम सुनता है।
- तत्पश्चात् वह बबलाते हुए बोलना आरम्भ करता है इसके पश्चात् वह अक्षरों को जोड़कर पढ़ना सीखता है तथा अन्त में वह लिखना प्रारम्भ करता है।

25. भाषाई निपुणता में शामिल दो तत्व हैं **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) प्रवाह और सटीकता (2) शब्द ज्ञान और स्पष्टता
(3) (1) और (2) (4) लिखना और पढ़ना

व्याख्या *(1)* भाषाई निपुणता में शामिल तत्व हैं– प्रवाह और सटीकता तथा शब्द ज्ञान एवं स्पष्टता।

- किसी भी भाषा में निपुणता तभी प्राप्त की जा सकती है जब उस भाषा में सही प्रवाह के साथ स्पष्ट रूप से बोला जाए तथा उसमें स्पष्टता विद्यमान हो। इन्ही सब तत्वों की उपस्थिति के पश्चात् उस भाषा में अच्छा लेखन सम्भव हो सकता है।

26. भाषा शिक्षण का एक तरीका जो माध्यम और अध्ययन के अंतिम लक्ष्य दोनों के रूप में अन्योन्यक्रिया पर जोर देता है, ... कहलाता है। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) स्थितिपरक भाषा शिक्षण
(2) समग्र भाषा शिक्षण
(3) सम्प्रेषणीय भाषा शिक्षण
(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या *(3)* भाषा शिक्षण का एक तरीका जो माध्यम और अध्ययन के अन्तिम लक्ष्य दोनों के रूप में अन्योन्यक्रिया पर जोर देता है, सम्प्रेषणीय भाषा शिक्षण कहलाता है।

- सम्प्रेषणीय भाषा शिक्षण का उद्देश्य किसी एक भाषा में (विदेशी भाषा में) संवाद करने की योग्यता प्राप्त करना होता है।
- सम्प्रेषणीय भाषा शिक्षण (CLT) में शिक्षक निर्देशक की अपेक्षा सहायक की भूमिका का निर्वहन करता है। इसके अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक अध्ययन की अपेक्षा भाषा की ध्वनि के विकास (Oral/Verbal skill) को पढ़ने एवं लिखने से ज्यादा महत्व दिया जाता है।

27. निम्नलिखित में से कौन-सा द्विभाषी विधि का एक गुण नहीं है? **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) यह भाषण अभ्यास पर जोर देता है
(2) विद्यार्थी निष्क्रिय अध्येता है
(3) इसमें विशेषतः प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता नहीं पड़ती
(4) यह शिक्षक का समय, ऊर्जा और श्रम बचाता है।

व्याख्या *(1)* द्वि-भाषी विधि में भाषण अभ्यास पर जोर नहीं दिया जाता है। अतः यह द्वि भाषी-विधि का गुण नहीं है।

- द्वि-भाषी विधि के अन्तर्गत एक भाषा से दूसरी नई विदेशी भाषा को सीखने पर बल दिया जाता है तथा इसमें संवाद पर अधिक बल दिया जाता है।

28. भारतीय समाज में बहुभाषी चरित्र को देखा जाना चाहिए **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अवरोध के रूप में
(2) विद्यालयीन जीवन के संवर्धन के संसाधन के रूप में
(3) छात्रों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करने में शिक्षक की क्षमता को चुनौती के रूप में
(4) शिक्षार्थी के लिए विद्यालयीन जीवन को जटिल बनाने वाले कारक के रूप में

व्याख्या *(2)* भारतीय समाज में बहुभाषी चरित्र को विद्यालयीन जीवन के संवर्धन के संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 यह स्पष्ट करता है कि कक्षा-कक्ष में बहुभाषी चरित्र या बहुभाषाओं को भाषा कौशल विकसित करने के रूप में देखा जाना चाहिए अर्थात् बहुभाषी कौशल को विद्यालय के संसाधनों के संवर्द्धन अर्थात् बच्चों के ज्ञान निर्माण की प्रमुख भूमिका की पहचान के रूप में देखा जाना चाहिए।
- इस संसाधन के प्रयोग से विद्यार्थी भारत की बहुभाषी संस्कृति से अवगत होते हैं एवं अन्य भाषाओं के प्रति संवेदनशील बनते हैं।

29. छोटी उम्र के शिक्षार्थियों में पठन में कठिनाई निम्नलिखित में से किसका संकेत नहीं है कठिनाई में? **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) अक्षर और शब्द पहचानने में
(2) पठन गति और धारावाहिता में
(3) शब्दों एवं विचारों को समझने में
(4) वर्तनी निरंतरता

व्याख्या *(4)* छोटी उम्र के शिक्षार्थियों में पठन सम्बन्धित कठिनाई के अन्तर्गत 'वर्तनी निरंतरता' कठिनाई का संकेत नहीं है।
- 'वर्तनी निरंतरता' का सम्बन्ध लेखन कौशल से है जबकि इसके विपरीत अक्षर एवं शब्द पहचान में कठिनाई, शब्दों एवं विचारों को समझने में कठिनाई, पठन धारावाहिता में कठिनाई, पठन कौशल में आने वाली कठिनाईयाँ हैं।

30. सामान्य लोग भाषा को केवल ..... के माध्यम के रूप में पहचानते हैं। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) सम्प्रेषण (2) व्याकरण अध्ययन
(3) विद्यालय में अध्ययन (4) एक शब्दकोष प्रयोग करना

व्याख्या *(1)* सामान्य लोग भाषा को केवल सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में पहचानते हैं।
- भाषा में कई तरह के संचार या सम्प्रेषण (Communications) हो सकते हैं, जैसे मौखिक सम्प्रेषण, (Verbal Communication) लिखित सम्प्रेषण, मुखाकृति सम्प्रेषण (Facial Communication), कला आंगिक सम्प्रेषण मूकाभिनय आदि।
- इन सभी सम्प्रेषणों का उद्देश्य विचारों एवं भावों को दूसरों तक पहुँचाना होता है।

31. किस आयु में एक बच्चा अपना/अपनी भाषा को विकसित करता है? **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) 8 वर्ष (2) 6 वर्ष (3) 4 वर्ष (4) 1 वर्ष

व्याख्या *(3)* 4 वर्ष की आयु में एक बच्चा अपना/अपनी भाषा को विकसित कर लेता है।
- एक 4 वर्ष का बालक सभी शब्द-भेदों (Parts of Speech) को मिलाकर छोटे-छोटे वाक्यों को बोल लेता है।
- 4 वर्ष के बालक का शब्द भण्डार 1600 शब्दों का होता है।
- जब बालक विद्यालय जाना प्रारम्भ करता है तो उसके शब्द-भण्डार में तेजी से वृद्धि होने लगती है जिससे उसकी भाषा समृद्ध होती है।

32. सभी बालक ..... व्याकरण से बनी भाषा के अधिग्रहण के लिए एक जन्मजात वृत्ति के साथ जन्म लेते हैं। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) सार्वभौमिक (2) आवश्यक
(3) भाषाई (4) सस्पष्ट

व्याख्या *(1)* सभी बालक सार्वभौमिक व्याकरण से बनी भाषा के अधिग्रहण के लिए एक जन्मजात वृत्ति के साथ जन्म लेते हैं।
- भाषा-विज्ञानी नोम चॉमस्की ने भाषा के एक मनोभाषीय सिद्धान्त का विकास किया जिसका आधार जैविक होता है।
- इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में व्याकरण सीखने की एक जन्मजात क्षमता होती है।
- इस व्याकरण के नियम सार्वभौमिक होते हैं जिसके कारण बालक वाक्य विन्यास (synbax) को सीखकर भाषा ग्रहण करते हैं।

33. हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची ..... भाषाओं को भारत की मुख्य भाषाओं के रूप में नामित करता है। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) 14 (2) 16
(3) 20 (4) 22

व्याख्या *(1)* हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची 22 भाषाओं को भारत की मुख्य भाषाओं के रूप में नामित करता है।
- संविधान की 8वीं अनुसूची के अनुसार निम्नलिखित भाषाओं को राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो इस प्रकार हैं- असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली, मैथिली, संथाली, डोगरी एवं बोडो।
- मूल संविधान में केवल 14 भाषाएँ थी। कालान्तर में 8 भाषाओं को जोड़ा गया।

34. अग्निहोत्री के अनुसार,.....का भाषाई कुशलता, अध्ययनपरक उपलब्धि, संज्ञानात्मक लोचशीलता और सामाजिक सहिष्णुता के साथ अत्यन्त निकट सम्बन्ध है। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) एकभाषावाद (2) द्विभाषावाद
(3) त्रिभाषावाद (4) बहुभाषावाद

व्याख्या *(1)* अग्निहोत्री के अनुसार, एकभाषावाद का भाषाई कुशलता, अध्ययनपरक उपलब्धि, संज्ञानात्मक लोचशीलता और सामाजिक सहिष्णुता के साथ अत्यन्त निकट सम्बन्ध है।

35. पश्चिमी देश भाषा के सम्बन्ध में प्रबल रूप से ..... है। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) विषमरूप (2) द्विभाषी
(3) विविध (4) एकभाषी

व्याख्या *(4)* पश्चिमी देश भाषा के सम्बन्ध में प्रबल रूप से एकभाषी है।
- पश्चिमी देश संयुक्त राज्य अमेरिका जो यूरोप, एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका से आए हुए विभिन्न समुदायों का देश है।
- यद्यपि इन समुदायों की अलग-अलग भाषाएँ और बोलियों थी, किन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका मुख्य रूप से एकभाषी देश है।
- हालांकि अमरीकी संविधान में किसी भाषा को राष्ट्रभाषा की संज्ञा नहीं दी गई लेकिन यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि उसी व्यक्ति को अमरीकी नागरिकता दी जाएगी जो अंग्रेजी भाषा जानता हो।

36. उर्दू, बंगाली और असमी भारत में निम्नलिखित में से किस भाषा परिवार से आते हैं। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) ईंडो-आर्यन (2) द्रविड़
(3) तिब्बती-बर्मन (4) मुडा

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(2)* उर्दू, बंगाली और असमी भारत में ईंडो-आर्यन भाषा परिवार से आते हैं।
- भारत में भाषाओं की बहुलता है। इनमें से कुछ भाषाओं में समानता है, सहअस्तित्व है तो कुछ भाषाओं में असमानता भी है।
- सामान्यतः समान गुण-धर्म वाली भाषाएँ किसी एक भाषा परिवार के अन्तर्गत आती हैं।
- अतः उर्दू, बंगाली और असमी के अतिरिक्त हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, नेपाली, उड़िया, कश्मीरी इंडो-आर्यन भाषा परिवार की भाषाएँ हैं।

37. इनमें से कौन-सा भारत में भाषा परिवारों की संख्या के संगत है? **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) एक (2) दो (3) तीन (4) चार

व्याख्या *(4)* भारत में चार भाषा-परिवार हैं–
1. ईंडो-आर्यन भाषा परिवार
2. द्रविड़ भाषा परिवार
3. तिब्बतों-बर्मन भाषा परिवार
4. मुंडा भाषा परिवार

38. सभी भारतीय भाषाओं में, दूसरे शब्द होते हैं जो अतिरिक्त शब्द होते हैं और उनका कोई अर्थ नहीं होता यदि वे अकेले प्रयोग किए जाएँ परन्तु पहले वाले के समरूप लगते हैं। ये शब्द.....कहलाते हैं। **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) युगल शब्द (2) भागी शब्द
(3) युग्म शब्द (4) प्रतिध्वनि शब्द

व्याख्या *(4)* प्रतिध्वनि शब्द प्रतिध्वनि शब्दों में दूसरा शब्द 'अतिरिक्त' के अर्थ में आता है लेकिन अपने आप में निरर्थक होता है।
- उदाहरणस्वरूप-हिन्दी में 'चाय-वाय' कहते हैं तो 'वाय' का अर्थ है चाय के साथ कुछ और/अतिरिक्त चीजें। लेकिन 'वाय' का अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं है।
- खाना-वाना, पानी-वानी प्रतिध्वनि शब्दों के उदाहरण हैं।

39. संज्ञा, विशेषण या क्रिया विशेषण सभी भारतीय भाषाओं में नए शब्दों की रचना के लिए दोहराए जा सकते हैं। ऐसे शब्दों को.....कहते हैं। **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) सर्वनाम (2) द्विरुक्त शब्द
(3) प्रतिध्वनि शब्द (4) सामान्य शब्द

व्याख्या *(2)* सभी भारतीय भाषाओं में संज्ञा, विशेषण क्रिया विशेषण को द्विरुक्त (एक ही शब्द की दो बार आवृत्ति) किया जा सकता है।
- द्विरुक्त शब्द 'प्रत्येक' के अर्थ में आता है। जैसे 'घर-घर' का अर्थ दो घर से नहीं बल्कि प्रत्येक घर से है।

40. भाषा जो गैर-स्थानीय लोगों द्वारा सीखी और प्रयोग की जाती है, ...कहलाती है। **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) प्रथम भाषा (2) द्वितीय भाषा
(3) विदेशी भाषा (4) बहुभाषा वाद

व्याख्या *(2)* भाषा जो गैर-स्थानीय लोगों द्वारा सीखी और प्रयोग की जाती है, द्वितीय भाषा कहलाती है।
- उदाहरण के लिए बिहार में रहने वाला बच्चा घर पर भोजपुरी, मगही या मैथिली बोलता है लेकिन विद्यालय में वह हिन्दी या अँग्रेजी माध्यम में पढ़ता है। इस परिस्थिति में हिन्दी या अंग्रेजी द्वितीय भाषा होगी।
- द्वितीय भाषा में शुद्धता और धारा प्रवाहित समय के साथ विकसित होती है।
- विद्यार्थी की प्रेरणा, आत्मविश्वास, उत्सुकता एवं भाषा सीखने के प्रति बालक का व्यवहार दूसरी भाषा को सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

41. किस आयु में एक बालक चार या पाँच उलझे वाक्यों में से सार्थक गद्य बनाने में सक्षम होगा? **(DSSSB PRT, 2014)**

(1) 6 – 7 वर्ष (2) 3 – 4 वर्ष
(3) 1 – 2 वर्ष (4) 4 – 5 वर्ष

व्याख्या *(1)* 6-7 वर्ष का एक बालक चार या पाँच उलझे वाक्यों में से सार्थक गद्य बनाने में सक्षम होगा।
- इस आयु तक बालक भाषागत दृष्टि से वयस्क हो जाता है।
- बालक भाषा की आधारभूत शब्दावली और वाक्य संरचना के प्रमुख नियम सीख जाता है।

42. किस स्तर तक विद्यार्थी द्वितीय भाषा में अपने दृष्टिकोण लिखने में सक्षम हो जाते हैं? **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) पूर्व-प्राथमिक (2) निम्न प्राथमिक
(3) उच्च प्राथमिक (4) उच्च किंडरगार्टन

व्याख्या *(3)* उच्च प्राथमिक स्तर तक विद्यार्थी द्वितीय भाषा में अपने दृष्टिकोण लिखने में सक्षम हो जाते हैं।
- उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों का मानसिक स्तर इतना परिपक्व हो जाता है कि वे अपने अनुभवों के आधार पर अपना दृष्टिकोण लिखकर अभिव्यक्त कर सकें।

43. द्विभाषावाद के सकारात्मक परिणाम मिलते हैं जो स्थानांतरित किए जा सकते हैं। इसे.....भी कहा जाता है। **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) ग्राही द्विभाषावाद
(2) साथ-साथ द्विभाषावाद
(3) सकारात्मक स्थानान्तरण
(4) नकारात्मक स्थानान्तरण

व्याख्या *(3)* सकारात्मक स्थानान्तरण जब एक परिस्थिति में सीखा हुआ ज्ञान दूसरी परिस्थिति में सीखने में सहायक होता है तो सकारात्मक स्थानान्तरण कहा जाता है।
- सकारात्मक स्थानान्तरण से द्विभाषावाद के सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

44. किस प्रकार का शिक्षण अर्थ पर जोर देता है न कि भाषा सीखने में रूपों और पैटर्न पर? **(DSSSB PRT, 2018)**

(1) सम्प्रेषणीय भाषा शिक्षण
(2) प्रतिस्पर्धात्मकता आधारित भाषा शिक्षण
(3) सहयोगी अध्ययन
(4) सहकारी भाषा शिक्षण

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(1)* सम्प्रेषणीय भाषा शिक्षण अर्थ पर जोर देता है न कि भाषा सीखने के रूपों और पैटर्न पर।
- सम्प्रेषणीय भाषा शिक्षण के माध्यम से बालकों को अपने विचारों, भावों एवं अनुभवों का प्रदर्शन करने का अवसर प्राप्त होता है।
- ऐसे में विचारों, भावों एवं अनुभवों का अर्थपूर्ण होना आवश्यक है न कि भाषा सीखने के रूपों और पैटर्न का।

45. सम्प्रेषणात्मक भाषा शिक्षण में, निम्नलिखित में कौन-सा प्रबल होता है? (DSSSB PRT, 2018)
(1) शिक्षक (2) सुविधाकारक
(3) विद्यार्थी (4) प्रस्तोता

व्याख्या *(3)* सम्प्रेषणात्मक भाषा शिक्षण में, विद्यार्थी प्रबल होता है।
- सम्प्रेषणात्मक भाषा शिक्षण में विद्यार्थी को केन्द्र में रखकर सम्प्रेषण के लिए प्रेरित किया जाता है ताकि विद्यार्थी को सम्प्रेषण में कोई कठिनाई न आए।
- विद्यार्थी बिना किसी संकोच के अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकें, इस शिक्षण का लक्ष्य है।

46. एक अच्छा सम्प्रेषक होने के लिए क्या आवश्यक है? (DSSSB TGT, 2014)
(1) अच्छा शिक्षक (2) अच्छा विद्यार्थी
(3) अच्छा श्रोता (4) परोक्ष श्रोता

व्याख्या *(3)* एक अच्छा सम्प्रेषक होने के लिए अच्छा श्रोता होना आवश्यक है।
- एक अच्छा वक्ता बनने से पूर्व एक अच्छा श्रोता होना अत्यन्त आवश्यक होता है।
- दूसरों के विचारों, भावों, मतों को ध्यानपूर्वक सुनना सम्प्रेषण के लिए पहली शर्त होता हैं।
- एक अच्छा श्रोता सामने उपस्थित व्यक्ति की बातों में रुचि लेता है।
- चूँकि सुनना एक कला है, जिसे अपने भीतर विकसित किया जाए तो जीवन में उन्नति एवं सफलता प्राप्ति का मार्ग सरल हो जाता है।

47. सम्प्रेषण का प्रक्रिया में, लिखित मीडिया निम्नलिखित में से किसका भाग है? (DSSSB TGT, 2014)
(1) प्रेषक
(2) सन्देश
(3) चैनल
(4) गैर-मौखिक सन्देश

व्याख्या *(2)* सम्प्रेषण की प्रक्रिया में लिखित मीडिया सन्देश का भाग है।
- किसी उद्देश्य से कहा या कहलवायी हुई और लिखित एवं महत्वपूर्ण बात सन्देश कहलाती है।

48. द्विमार्गी सम्प्रेषण की प्रक्रिया में, 'प्रेषक' एक सिरे पर हैं जबकि ..... दूसरे सिरे पर है। (DSSSB TGT, 2014)
(1) सन्देश (2) स्रोत
(3) चैनल (4) ग्राही

व्याख्या *(2)* द्विमार्गी सम्प्रेषण की प्रक्रिया में, 'प्रेषक' एक सिरे पर है जबकि ग्राही दूसरे सिरे पर है।
- द्विमार्गी सम्प्रेषण में सन्देश भेजने वाला प्रेषक (texter) कहा जाता है तथा सन्देश प्राप्त करने वाला ग्राही या प्राप्तकर्ता कहलाता है।

49. अध्येता की ओर से संलिप्तता इस चरण के दौरान अप्रत्यक्ष समझी जाती है। (DSSSB TGT, 2014)
(1) मौखिक प्राप्ति
(2) भागीदारी
(3) दृश्य और मौखिक प्राप्ति
(4) करना

व्याख्या *(2)* अध्येता की ओर से संलिप्तता मौखिक प्राप्ति चरण के दौरान अप्रत्यक्ष समझी जाती है।
- मौखिक चरण में केवल अध्यापक की सक्रिय भूमिका होती है। शिक्षार्थी केवल निष्क्रिय श्रोता के रूप में होता है।
- शिक्षक-केन्द्रित विधियों में अध्येता की ओर से संलिप्तता सदैव मौखिक प्राप्ति के ग्रहणकर्ता के रूप में होती है।

○○○

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

Daily Current Affairs PDF, GK PDF and Motivational Post के लिए हमें Follow करें

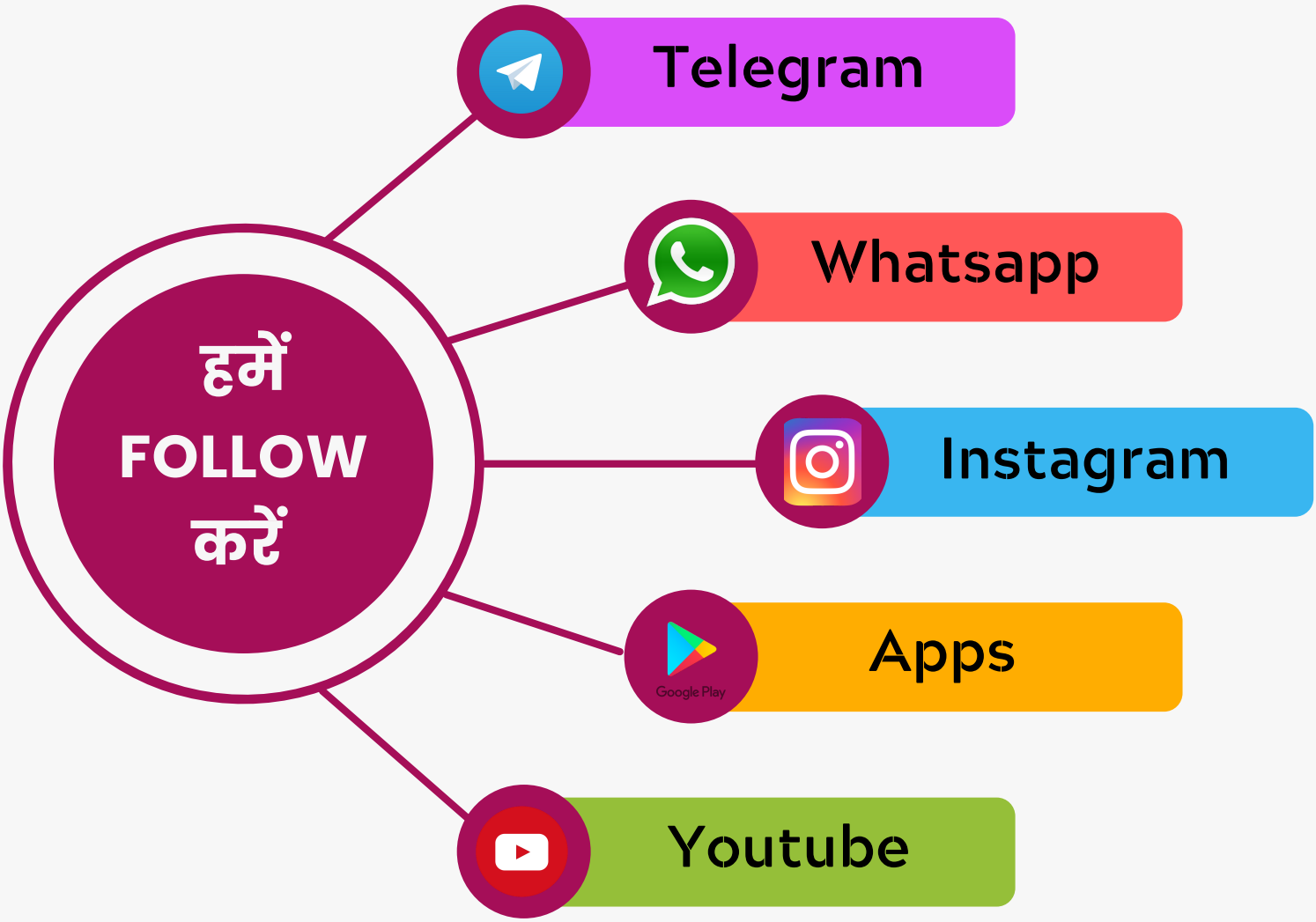

ANDROID APP ON Google play